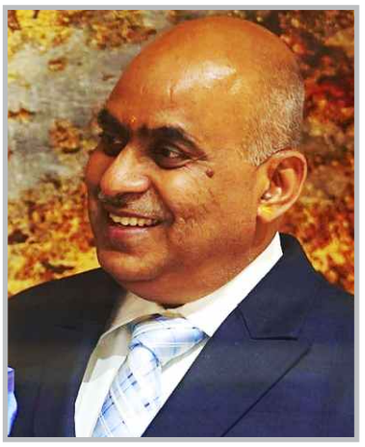

अध्यक्ष कार्यालय के संपर्क सूत्र :
प्रवीण जैन, मो नं. : 7506735396
ईमेल : info@prabhatji.com
वेब साइट : www.Prabhatji.com

प्रभातचंद्र जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

राजेन्द्र के. गोधा

राजेन्द्र के. गोधा
कार्याध्यक्ष/महामंत्री

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 10 अंक 1 अगस्त 2019

श्री प्रभातचन्द्र जैन	अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र गोधा	कार्याध्यक्ष/महामंत्री
श्री शिखरचन्द पहाड़िया	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल दोशी	उपाध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)	उपाध्यक्ष
श्री गजराज गंगवाल	उपाध्यक्ष
श्री तरुण काला	उपाध्यक्ष
श्री के.सी. जैन(काला)	कोषाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	मंत्री
श्री विनोद कोयलावाले	मंत्री
श्री खुशाल जैन (सी.ए.)	मंत्री
श्री जयकुमार जैन	मंत्री

संपादकीय सलाहकार
पंडित श्री रतनलाल बैनाड़ा
डॉ.श्रीमती नीलम जैन
डॉ.अनेकांत जैन
पंडित श्री अरुणकुमार जैन, शास्त्री

परामर्श मंडल
श्री गणेशकुमार राणा
श्री शरद जैन
श्री विनोद बाकलीवाल
श्री कमलबाबू जैन
श्री सुरेश सबलावत

संपादक मंडल
प्रधान संपादक
श्री राजेन्द्र के.गोधा

संपादक-साज सज्जा
श्री मनीष वैद

संपादक
श्री उमानाथ दुबे

उप संपादक
श्री किरण प्रकाश जैन
श्री प्रवीण जैन(सी.एस.)
श्री लवकेश जैन
श्री विजय धुर्रा

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
website : www.tirthkshetracommittee.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे भगवान महावीर	7
हमने जिंदगी भर कुछ न किया?	9
भगवान महावीर का जैनत्व	12
युग प्रवर्तक भगवान महावीर एवं उनके दिव्य सिद्धान्त	14
तीर्थंकर जन्मभूमि हस्तिनापुर से प्रारंभ हुआ अक्षयतृतीया पर्व	15
AmMm` Ir {d_bgmJa Or _hmamO : i`pŠVËd Ed H$\{VËd	16
मुनिवर समयसागर जी और योगसागर जी बने निर्यापक मुनि	19
ज्यादा आवाज करने वाला कौआ भी शांत रहता है, लेकिन हम ...	22
भगवान पार्श्वनाथ जी का अतिशय क्षेत्र - कमठाण	23
बोम्मालगुट्टा (वृषभाद्रि पर्वत) - दसवीं सदी का एक ... प्राचीन जैन तीर्थ	24
"तमिलनाडु के प्राचीन तीर्थक्षेत्रों की सर्वेक्षण-यात्रा"	32
श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर करवाए गए कुछ प्रमुख कार्यों का सचित्र विवरण	37

विशेष निवेदन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी सदस्यों से निवेदन है कि वह अपने नाम एवं स्थान के साथ मोबाइल तथा ई.मेल तीर्थक्षेत्र कमेटी को tirthvandana4@gmail.com पर भिजवाने की कृपा करें जिससे भविष्य में ई. मेल अथवा मोबाईल पर अन्य विषयों की जानकारी तथा मीटिंग आदि की सूचनाएं भिजवाई जा सके।

मंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बॉडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

युवतियां कैसे करें पर्युषण पर्व की तैयारी ?

- रुचि अनेकांत जैन, योग शोध अध्येता, नई दिल्ली

जैन परंपरा में पर्युषण पर्व आत्म विशुद्धि योग के सबसे बड़े साधन हैं। पहले और आज की पर्युषण पर्व की आराधना, साधन और साधना में बहुत अंतर आ गया है। पहले संयुक्त परिवारों में बड़े बुजुर्गों के सान्निध्य में पर्युषण के दिन कब आते थे और धर्माराधना करते हुए कब दिन निकल जाते थे पता ही नहीं चलता था। परन्तु आज इस कंप्यूटर युग में जहाँ व्हाट्सएप, फेसबुक, मूषक और ट्विटर आदि ने सभी को इतना उलझा रखा है कि बड़े शहरों में एकल परिवारों में युवतियां पर्युषण के दिनों में धर्म लाभ तो लेना चाहती हैं, परन्तु छोटी-बड़ी समस्याएं उनके सामने अक्सर उपस्थित रहतीं हैं जिनके कारण कभी कभी जैन युवती चाहकर भी धर्म साधना नहीं कर पाती है। इन्हीं सब परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाते हुए किस प्रकार पर्युषण के दिनों में धर्माराधना की जा सकती है, आइये कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर विचार करते हैं –

◆ अपने घर के समीप के उस धार्मिक स्थल या जिन मंदिर का चुनाव करें, जिनमें आप आसानी से अपने बच्चों के साथ जाकर पूजा, प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का लाभ ले सकती हैं। यदि दूरी हो तो वाहन स्वयं न चलाकर ओला, ऊबर आदि कैब नियमित बुक करके मंदिर जरूर जाएँ।

◆ बच्चों को स्कूल जाने से पहले रोज मंदिर जी में जिनेन्द्र देव के दर्शन अवश्य कराएं। जिस दिन छुट्टी हो उस दिन मंदिर के सभी कार्यक्रमों में ले जाएँ।

◆ धर्म स्थलों में गरिमा पूर्ण,सादगी युक्त वस्त्र पहन कर खुद भी जाएँ और बच्चों को भी ले जाएँ। कोशिश करें कि साड़ी अवश्य पहनें, यदि सूट पहने तो सादगी वाला। सिर पर पल्लू अथवा चुन्नी अवश्य रखें। कम से कम पर्युषण पर्व में धर्मस्थानों में जींस और टी शर्ट, शॉर्ट ड्रेस से अवश्य बचें। हमारे वस्त्रों में गरिमा अवश्य दिखनी चाहिए।

◆ यदि साधु संघ विराजमान हों तो उनके दर्शन अवश्य करें और इस बात की मर्यादा रखें कि चाहे कितना भी जरूरी काम हो साधु भगवंतों के पास अकेले न जाकर समूह में जाएँ। रात्रि में उनके ठहरने के स्थान जाना आगम विरुद्ध है, अपनी सीमा में रहें। किसी भी कक्षा, कार्यक्रम में ब्रह्मचारी, साधु महाराज आदि से पर्याप्त दूरी बना कर विनय पूर्वक रहें।

◆ बच्चों के टिफ़िन बॉक्स में जमीकंद व बाज़ार से निर्मित कोई भी भोज्य पदार्थ न दें, साथ ही घर में कुछ शुद्ध मिठाई और नमकीन अवश्य बनाकर रखें। सूखे मेवे बाज़ार से लाकर शोधकर पूर्व से ही रखें। बच्चों को कैंटीन से लेकर खाने को पैसे बिल्कुल न दें।

◆ स्कूल से आने के बाद बच्चों का होमवर्क समय पर करवाकर उन्हें सूर्यास्त से पहले ही भोजन करवायें। यदि आपके पति दफ्तर, कारखाने या दुकान से रात्रि में लौटते हैं तो उन्हें शाम का सात्विक भोजन टिफ़िन में पहले से सुबह ही दे दें, जिससे वे इन दिनों में रात्रि भोजन से बच सकें।

◆ इन दिनों बरसात का मौसम होने से अनेक प्रकार के जीव-जंतु उत्पन्न हो जाते हैं अत: अपने घर तथा रसोई की इतनी साफ़-सफाई पूर्व से ही करके रखें ताकि जीव उत्पन्न न हो सकें।

◆ प्रयास करें कि रसोई में सूर्य की रोशनी अवश्य आये तथा सभी कार्य सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच संपन्न हो जायें।

◆ अपने बच्चों में दान की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए उनके माध्यम से प्रतिदिन१०-२० रुपये मंदिर जी की गुल्लक में अवश्य डलवाएँ। साथ ही पर्व के दिनों में घर से अपनी द्रव्य (चावल, बादाम, चिटक, लवंग, इलायची आदि) मंदिर जी ले जायें।

◆ रात्रि में होने वाले प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों व पति के साथ अवश्य जाएँ तथा खूब उत्साह पूर्वक भाग लें।

◆ घर आकर दस धर्मों में प्रत्येक दिन, प्रत्येक धर्म का महत्त्व अपने पति व बच्चों को अवश्य बताएं। कोई एक ग्रन्थ लेकर उसका स्वाध्याय जरूर करें और सभी को विनम्रता पूर्वक सुनने को कहें।

◆ युवतियां स्वयं भी प्रश्न मंच आदि प्रतियोगिताओं तथा छोटी-छोटी नाटिकाओं में भाग लें और पति भी एवं बच्चों को भी प्रेरित करें।

◆ कामकाजी महिलाओं को भी चाहिए कि वे पर्व के दौरान दिन में एक बार जरूर मंदिरजी जाएँ। अपनी कार में ऑडियो लगा कर दफ्तर जाते समय भी प्रवचन सुन सकते हैं। मैट्रो ट्रेन, बस या लोकल ट्रेन से जाना हो तो इयर फोन लगा कर मोबाइल पर अच्छी ज्ञानवर्धक बातें सीखी जा सकती हैं तथा पाठ सुने जा सकते हैं।

◆ तत्वार्थ सूत्र का एक बार पाठ करने या सुनने से एक उपवास का फल मिलता है अत: चाहे साक्षात या मोबाइल आदि पर एकाग्रता पूर्वक दिन में एक बार यह पाठ अवश्य सुनें तथा जिनवाणी लेकर पाठ करें।

◆ आजकल मंदिरों, स्थानकों तथा स्वाध्याय भवनों में बहुत ही रोचक शैली में आधुनिक तरीकों से जैन दर्शन के सिद्धांतों को समझाया जाता है, अत: किसी भी उपाय से बच्चों तथा घर के अन्य सदस्यों को प्रवचन सुनाने अवश्य ले जाएँ। इससे सबसे बड़ा फ़ायदा यह होता है कि जो बात आप घर पर हज़ारों बार में नहीं समझा सकते हैं वह बात वहां के माहौल, प्रभाव और आकर्षक शैली से एक बार में ही दिमाग में बैठ जाती है।

◆ अपने घर पर भी शाम के समय सभी लोग एक साथ भजन,

स्तुति, आरती या स्तोत्र अवश्य पढ़ें तथा बच्चों को सिखाएँ।

◆ प्रतिदिन सामायिक तथा प्रतिक्रमण करके शयन करें तथा शयन से पूर्व अगले दिन के धर्म का स्वरुप पढ़ लें और अगले दिन सुबह से उस धर्म पर चिंतवन करते हुए जीवन में उतारने का प्रयास करें।

वर्षभर में पर्युषण पर्व ही एक ऐसा अवसर होता है जब हम खुद को रीचार्ज कर सकते हैं नहीं तो वर्षभर हम उसी मतलबी दुनिया में जीते हैं जिसमें हमें खुद के आत्मकल्याण, आत्मविशुद्धि का अवसर लगभग ना के बराबर मिलता है।

घर पर धर्म महिलाओं से ही चलता है। हमारे बच्चे भले ही अभी उतना अभ्यास न कर पायें, लेकिन हमें देख कर सीखते जरूर हैं। आज बच्चे आप के हाथ में हैं थोडा बड़े होने के बाद वे हॉस्टल आदि में भी चले जाते हैं या हमारी पहुँच के बाहर हो जाते हैं अत: अभी समय रहते यदि आपने उनमें अध्यात्म के बीज बो दिए तो बाद में उसकी फसल भी लहलहाती है। वे जब आत्मनिर्भर हो जाते, हैं तब उन्हें जीवन में संतुलन के लिए अध्यात्म निर्भर भी होना होता है, यदि बचपन के संस्कार रहते हैं तो वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपना संतुलन नहीं खोते। एक नारी घर की धुरी होती है वह चाहे तो सभी को धर्म कार्य में प्रेरित करके सभी का भला भी कर सकती है और धर्म अध्यात्म के प्रति उपेक्षा करके घर के सदस्यों को अधो गति में भी धकेल सकती है। खुद धर्म करने से तो पुण्य होता ही है अन्य को धर्म ध्यान में लगाने से भी सातिशय पुण्य होता है।

हम युवतियां इन पर्युषण के दिनों में जितने सहज और सरल रहेंगें, धर्म के प्रति हमारा रुझान जैसा रहेगा पूरा परिवार भी वैसा ही अनुकरण करेगा। जिस प्रकार एक अच्छी और पक्की नींव पूरे घर की आधारशिला होती है उसी प्रकार हमारे धार्मिक संस्कार भी हम पर ही टिके हुए हैं आगे की पीढ़ियों में इसे जागरूक बनाये रखने का उत्तरदायित्व भी हम युवतियों पर ही है, ऐसे में हमें चाहिए कि पर्युषण पर्व श्रद्धापूर्वक धूमधाम से व्रतों नियमों का पालन करते हुए इस प्रकार मनाएं जिससे हमारे पारिवारिक सुख और शांति में वृद्धि हो और सभी आत्म आराधना के इस शाश्वत मार्ग पर चल कर स्व-पर कल्याण कर सकें।

भगवान ऋषभदेव का भारतीय संस्कृति को अवदानः

- सुभाष सिंघई, कटनी (मप्र)

प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव का जन्म ही भारतीय संस्कृति के लिए बहुत बड़ा अवदान है। भारतीय संस्कृति के अवदान को समझने के पूर्व ऋषभदेव के जन्म से प्रारम्भ के जीवन को समझना आवश्यक है।

ऋषभ देव के जन्म के समय नागरिक सभ्यता का विकास नहीं हुआ था, अधिकांश भूमि घास और सघन वृक्षों से आच्छादित रहती थी। गाय, भैंस, शेर आदि पशु अधिक पाए जाते थे, उन्हीं के बीच मनुष्य रहते थे। उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति वृक्षों से होती थी जिन्हें 'कल्प-वृक्ष' कहा जाता था। माँ-बाप पुत्र और पुत्री को जन्म देकर मर जाते थे। पुत्र और पुत्री बड़े होकर पति-पत्नी के रूप में रहने लगते थे। यह था भोग-भूमि का काल।

समय बीतता गया, भोग-भूमि का काल समाप्त होने लगा। कल्पवृक्षों से आवश्यकतानुसार सामग्री मिलना बंद होने लगी। लोग एक दूसरे से लड़ने-झगड़ने लगे।

जंगली पशु-पक्षी परेशान करने लगे तब 'कुलकरों' ने प्रजा को कर्म भूमि का ज्ञान देकर चिंतित मनुष्यों को प्रकृति के परिवर्तन के विषय में बताया।

अयोध्या नगरी उस दिन धन्य हो गई जब चौदहवें कुलकर राजा नाभिराय की धर्मपत्नी मरूदेवी ने चंचल, हृष्ठ-पुष्ठ बालक ऋषभ को जन्म दिया। युवावस्था को प्राप्त कर ऋषभदेव शासक बने। उन्होंने जनता को जीवन जीने की कला सिखाई, हिंसक पशुओं से रक्षा करने का उपाय बताया, पशुओं का पालन सिखाया। बाल बच्चों को पालना, संगठित रहना, खेती करना, आग उत्पन्न करना, ईख (गन्ने) को दवाकर रस निकालने आदि कलाओं की शिक्षा दी। इस तरह असि,मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प की शिक्षा देकर जीवन जीने का रास्ता बताया।

आपने नगर बसाये, देश को जनपदों में विभाजित किया। पूरी जनता को तीन वर्णों में

बांटा प्रथम-क्षत्रिय, द्वितीय- वैश्य, एवं तृतीय शूद्र। जिन्हें राष्ट्र, धर्म और समाज की रक्षा का दायित्व दिया वे क्षत्रिय कहलाये !
जिन्हें खेती, व्यापार, गौ-पालन आदि का कार्य दिया वे 'वैश्य' कहलाये और जिन्हें सेवा का दायित्व दिया वे शूद्र कहलाये।

ऋषभदेव की दो पत्नियाँ थी- एक का नाम था सुनन्दा और दूसरी का नाम था नंदा! दोनों ने १०० पुत्र और दो पुत्रियों को जन्म दिय । रानी सुनन्दा ने भरत नाम के पुत्र एवं ब्राह्मी नाम की पुत्री को जन्म दिया। रानी नंदा ने बाहुवली और सुंदरी को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त किया । ऋषभदेव ने सभी पुत्रों को हर प्रकार की शिक्षा से प्रशिक्षित किया। अपनी दोनों पुत्रियों ब्राह्मी और सुंदरी को क्रमशः अंक और अक्षर विद्या सिखाकर समस्त कलाओं में निपुण किया। ब्राह्मी लिपि का प्रचलन तभी से हुआ है और नागरी लिपि को विद्वान लोग उसी का विकसित रूप मानते हैं।

ऋषभदेव ने जो वर्ण भेद स्थापित किया था, उसका प्रयोजन मानव मानव के बीच ऊँच-नीच या छोटे-बड़े का भेदभाव उत्पन्न करना नहीं था। उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती ने ब्राह्मण वर्ण (विप्र) को जन्म दिया। उनका मानना था कि- क्षत्रिय वर्ण राष्ट्र, धर्म, समाज की रक्षा कर दुष्टों का निग्रह-संतों पर अनुग्रह करना था । वैश्य न्यायपूर्वक अर्थोपार्जन द्वारा धन कमाता था और समय आने पर अपने जीवन की समूची कमाई 'लोकहिताय, जनहिताय' में लगाने को तत्पर रहता था । शूद्र बनकर जनता की सेवा करना अपना परम सौभाग्य समझता था। उस समय हर व्यक्ति में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के गुण पाए जाते थे । क्योंकि वह धन, विद्या, सेवा, शक्ति के द्वारा स्वयं का और पर का हित पूर्ण करता था। वर्णव्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, कर्म- गुण के आधार पर थी। यही है भारतीय संस्कृति में भगवान ऋषभ देव का अवदान।

तत्कालीन जनता ने उन्हें युगदृष्टा, विश्वकर्मा, युगाधार, युग रक्षक, प्रजापति आदि विशेषणों से स्वीकार किया था। उन्होंने सिर्फ जीने की कला ही नहीं सिखाई है बल्कि प्राणियों को आत्मा के अभ्युदय और कल्याण-उत्थान का मार्ग भी बताया था 'मानव धर्म के रूप में उन्होंने सत्य, अहिन्सा, अनेकांत, समतावाद की शिक्षा दी थी। अहिंसा के द्वारा राग, द्वेष, अहंकार, अन्याय और अत्याचार पर विजय प्राप्त करने की कला सिखाई। अहिंसा से अनुचित भेद-भाव को मिटाकर समन्वयवाद और वाद-विवाद में समाधान का रास्ता निकालने की बात उन्होंने बताई। आपने कर्म-सिद्धांत की जानकारी देते हुए बताया कि-जो जैसे कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है सुख और दुख देने वाला कोई और नहीं प्राणी के अपने स्वयं के कर्म ही हैं। कर्मों का निर्माण विचारों से होता है, अतएव भूल कर भी ऐसे कर्म नहीं करना चाहिए जिससे स्वयं का और पर का पालन हो। जब तक आत्मा में दया और क्षमा की भावना जागृत नहीं होती, तब तक त्याग और उदारता नही आती। क्षमा- भावना अहिंसक में ही पाई जाती है। अहिंसा वीरता का श्रेष्ठ आभूषण है। आत्मोद्धार अर्थात आत्म विकास के लिए अहिंसा अनिवार्य है। ऋषभदेव का युग अहिंसा का युग होने के कारण स्वर्ण-युग माना गया है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और अनेकांत की विशद विवेचना करते हुए आपने मोक्ष-मार्ग की जानकारी देते हुए बताया कि सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, और सम्यक चरित्र 'मोक्षमार्ग' की तीन सीढियां हैं। दूसरे शब्दों में श्रृद्धा, ज्ञान और आचरण के बिना मोक्ष नहीं मिल सकता है। इन्हें रत्नत्रय भी कहते हैं। इसे समझने के लिए एक उदाहरण-पर्याप्त है, वह है लकड़ी की सीढ़ी। लकड़ी की सीढ़ी या नसैनी में दो बांस के लम्बे टुकड़े होते हैं। दोनों बांसों के बीच समानान्तर दूरी पर आड़ी लकड़ियाँ या तो बांधी जाती हैं या बांस में छेदकर फंसाई जाती हैं। दो बांस और एक आड़ी लकड़ी के सहारे बनती है 'नसैनी' जिस पर चढ़कर हम ऊपर मंजिल तक पहुँच जाते हैं। दोनों ओर के बांस सम्यकदर्शन और सम्यकज्ञान के प्रतीक हैं, तथा बीच की आड़ी लकड़ी सम्यक चरित्र का प्रतीक है। इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि मोक्षमार्ग के लिए रत्नत्रय आवश्यक हैं।

राज-दरबार में प्रजापति महाराज ऋषभदेव नीलांजना नामक नृत्यांगना का नृत्य देख रहे थे । अचानक नीलान्जना का स्वर्गवास हो जाता है। देवतागण तुरंत उसके स्थान पर अन्य नृत्यांगना को प्रस्तुत कर देते हैं। फिर भी महाराज को सच्चाई समझने में देर नहीं लगती है। वे समझ गए कि जीवन नश्वर है, क्षण भंगुर है। उन्हें वैराग्य हो गया। राज्य अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत जिनके नाम से हमारे देश का नाम भारत पड़ा तथा जो चक्रवर्ती हुए, देकर मुनि व्रत धारण कर एक हजार वर्षों तक कठिन तपस्या कर केवलज्ञान प्राप्त किया। अपने सभी विचारों पर विजय प्राप्त करने के कारण 'जिन' कहलाये और उनके द्वारा बताया गया धर्म जैन-धर्म कहलाया और उनके जैन-धर्म मानव-धर्म के रूप में स्थापित हो गया जो समय-समय पर अन्य तेईस तीर्थंकरों के द्वारा प्रचारित एवं प्रसारित किया जाता रहा है।

ऋषभदेव की उत्पत्ति का इतिहास भोगभूमि का अंत एवं कर्म भूमि का प्रारम्भ मान जाता है। उन्होंने मानव समाज का नया इतिहास रचा। मानव समाज को कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान दिया । नैतिक मार्ग के द्वारा सुख-शांति और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया, - यही है भगवान् ऋषभदेव का भारतीय संस्कृति को योगदान या अवदान ।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शांति सागर जी महाराज का श्रमण परम्परा में योगदान

- डॉ. शैलेश जैन, भोपाल

श्रमण परम्परा के उन्नयन में आचार्य मुनि, ऐलक, क्षुल्लक, आर्यिका माता एवं विद्वानों का बहुत बड़ा योगदान है। बीसवीं सदी में जब दिगम्बर साधु परम्परा लुप्त होती दिख रही थी। आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज ने अपनी चतुर्थ काल जैसी कठिन तपस्या से पंचम काल की इस कहावत में ' कि पंचम काल में दिगम्बर साधु बनना कठिन है' को नकार दिया। श्रमण परम्परा में आचार्य श्री का क्या योगदान है जानने के लिए तपस्वी जीवन की साधना को जानना आवश्यक है।

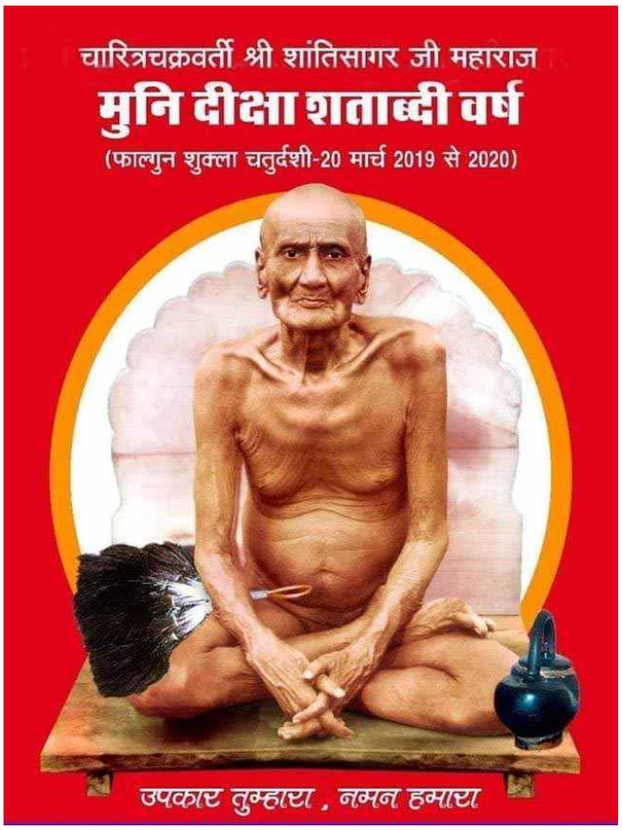

कर्नाटक प्रान्त के बेलगाँव जिले के चिकोड़ी तहसील में वेदगंगा और दूधगंगा नामक नदियों के संगम पर बसा ग्राम कुम्भोज (भोजग्राम) धार्मिक संस्कारों और कर्तव्य परायणना से ओत-प्रोत गाँव है, जहाँ श्री भीम गोंणा नाम के जमींदार रहते थे। उनकी धर्म परायण पत्नी श्रीमती सत्यवती (सत्यभामा) जिन्हें सरस्वती देवी भी कहते थे, ने भीम की तरह पहलवान, अर्जुन जैसा पराक्रमी-पुरुषार्थी, क्षत्रिय सात गोंणा पाटिल को २५ जुलाई १८७२ को जन्म दिया था। कक्षा तीसरी तक पढ़ने के बाद ९ वर्ष की आयु में इनकी शादी छ: वर्ष की कन्या के साथ कर दी गई थी जो कुछ दिनों बाद स्वर्गवासी हो गई और उसके बाद कभी विवाह न करने का निश्चय किया, इस तरह इनका जीवन पूर्णत: ब्रह्मचर्य युक्त रहा । वैसे भी बाल्यावस्था में आपने सिद्धप्पा स्वामी जी से ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया था तथा आठ वर्ष की आयु से ही आचार्य आदिसागर जी से श्रावकोचित व्रत लेना प्रारंभ कर दिया था । प्रारम्भ से ही आप शांत स्वभाव, गृहस्थ जीवन से निर्लिप्त, भद्र परिणाम, विवाह के बाद भी बाल-ब्रह्मचर्य, दयालु सत्यनिष्ठ, निर्भीक प्रकृति के व्यक्ति थे।

३२ वर्ष की उम्र में आपने श्री सम्मेद शिखर जी की यात्रा की थी और तभी से घी, तेल, आदि रसों का आजीवन त्याग कर दिया था जो पूर्व जन्म के वैराग्य का कारण बना।

२५ जनवरी १९१५ को ४२ वर्ष ११ माह की उम्र में क्षुल्लक दीक्षा, १५ जनवरी १९१९ को ४६ वर्ष ५ माह २० दिन में ऐलक दीक्षा एवं ४७ वर्ष सात माह सात दिन में श्री १०८ देवेन्द्र कीर्ति जी महाराज से मुनि दीक्षा प्राप्त की थी। ५२ वर्ष दो माह तेरह दिन में आचार्य पद प्राप्त कर लिया था ।

सन् १९४८ में बम्बई सरकार ने 'हरिजन मंदिर प्रवेश' कानून बनाया, जिसके अंतर्गत हरिजनों को जैन मंदिर में साधिकार प्रवेश के अधिकार प्रदत्त थे, इस नियम से अकलूज जैन मंदिर में हरिजन प्रवेश भी हुआ, इस नियम के विरोध में आचार्य श्री ने अन्न-जल का त्याग कर दिया।

इस नियम के विरोध में आर्ष-परम्परा के संरक्षकों द्वारा बम्बई उच्च न्यायालय के दरवाजे खटखटाए गये । आचार्य श्री के प्रयासों को सफलता मिली। आपको 'अतिराग रोगी, आध्यात्मिक संत, सहज- साधक, अमीक्षण ज्ञानोपयोगी' आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया था। आचार्य बनने के बाद 'चारित्र चक्रवर्ती, चारित्र चूड़ामणि, संयम शिरोमणि, निश्चय आराधक आदि उपाधियाँ समर्पित की गई ।

आपने अपने जीवन में ३३१ माह २७ दिन अर्थात २७ वर्ष ६० दिन उपवास कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने जीवन काल में आपने लगभग ९ करोड़ णमोकार महामंत्र की जाप देकर अनादि निधन-महामंत्र के महत्त्व को सुप्रतिष्ठित किया है। उनका मानना था कि धर्म रहित सौ वर्ष के जीवन से धर्म- सहित एक दिन का जीवन श्रेयस्कर है। उनका कहना था जब प्राणी संयम नहीं पाल सकता, तब इस शरीर के रक्षण द्वारा असंयम का पोषण क्यों किया जावे। व्रत-भ्रष्ट होकर जीना मृत्यु से भी बुरा है । व्रत रक्षण करते हुए मृत्यु का स्वागत परम उज्जवल जीवन-तुल्य है।

प्रेरक जीवन प्रसंग

वैसे तो आचार्यश्री के जीवन का प्रति पल कष्ट प्रद और परीक्षा जनक रहा है, जिससे स्पष्ट होगा कि- किस तरह उन्होंने निर्भिकता पूर्वक उपसर्गों को शांत-भाव से सहन किया था' यथा----

एक दिन आचार्यश्री एक मंदिर में एकांत में बैठकर निंद्रा-

विजय-तप के लिए ध्यानस्थ थे। मंदिर जंगल में था, पुजारी जी के द्वारा दीपक जलाने पर कुछ तेल आचार्यश्री के पास गिर गया। तेल के कारण लाल चीटिंया निकल आई और आचार्यश्री के शरीर पर चढ़ गई तथा शरीर को काटकर लहू-लुहान कर दिया। प्रात: पुजारी सहित ग्रामवासियों ने आचार्य श्री की हालत देखी, वे ध्यान मुद्रा में थे, शरीर से खून बह रहा था। लोगों ने आस पास शक्कर डाली तब चीटियाँ उतर कर नीचें आई। आचार्यश्री शांत रहे, इस तरह उन्होंने कर्मों की निर्जरा की।

दूसरी घटना – आचार्य श्री जंगल में एक गुफा में ध्यानस्थ थे। अचानक ७-८ हाथ लम्बा सर्प ताम्र लाल रंग का, आँखें दिखाते, फन-फैलाये उनके सामने खड़ा था। उसकी लप लपाती जीभ मानो विष के अंगारे उगल रही थी आचार्य श्री भयभीत नहीं हुए और यह घटना पं. सुमेरचंद जी जैन दिवाकर को सुनाई, तब पंडित जी ने पूछा आचार्यश्री आपको डर नहीं लगा, तो उन्होंने कहा- कि मैंने मन में विचार कर लिया था कि यदि मैंने पूर्वजन्म में या कभी उसका कुछ बिगाड़ा होगा तो वह मुझे परेशान करेगा अन्यथा चुपचाप चला जायेगा।

तीसरा प्रसंग – किसी श्रावक को कुष्ठ रोग हो जाने के कारण वह आत्म-हत्या करने जा रहा था। उसने आचार्य श्री के दर्शन कर यह बात बताई। आचार्य श्री ने उसे समझाकर मन लगाकर एकी भाव-स्त्रोत का पाठ करने को कहा। उन्होंने दिन में तीन बार पाठ किया। चार-सप्ताह में पूरा कुष्ठ ठीक हो गया। किन्तु सिर पर थोड़ा सा दाग रह गया, जिसे आचार्यश्री को दिखाकर पुन: आशीर्वाद माँगा। आचार्य श्री ने उस दाग पर हाथ फेरा- दाग गायब हो गया। यह थी उनकी ऋद्धि-सिद्धि का प्रभाव और एकीभाव-स्त्रोत पर श्रृद्धा।

एक और प्रसंग – एक श्रावक के घर में आचार्यश्री के आहार हो रहे थे। चावल के साथ दूध चलना था। श्रावक ने गरम दूध की गंजी कपड़े से पकड़कर उबलता हुआ, दूध उनकी अंजुलि में पलट दिया। गरम दूध अंजुलि में आने से असहनीय पीड़ा से आचार्य श्री बेहोश होकर जमीन पर बैठ गए। पूज्य श्री नेमि-सागर जी महाराज उस समय गृहस्थावस्था में थे, वे आचार्यश्री को संज्ञाहीन देखकर घबड़ा गए और अंतिम समय समझ कर णमोकार महामंत्र सुनाने लगे। कुछ देर में बेहोशी दूर हुई। लोगों की जान में जान आई। यह कष्ट भी आचार्य श्री ने हँसते-हँसते झेला।

और भी देखें एक प्रसंग - एक दिन एक श्रावक ने अपने चौके में आहार दिया, किन्तु जल देना भूल गया। आचार्य श्री ने जल के लिए प्रतीक्षा की, फिर बिना जल लिए ही चुपचाप बैठ गए। तीसरे दिन भी श्रावक जल देना भूल गया जलाभाव के कारण नवमें दिन आचार्यश्री की छाती में उष्णता के कारण फफोले पड़ गये। ऐसी परिस्थिति में भी वे गंभीर बने रहे। दसवें दिन उन्होंने सिर्फ जल ग्रहण किया। साधू का आहार भी तप है, यह भी कर्म निर्जरा का महान साधन है।

आचार्य श्री सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि जी (मप्र.) में रात्रि-तपस्या पर्वत पर करते थे। एक शाम शेर आचार्य श्री के पास बैठ गया और पूरी रात्रि बैठा रहा। ऐसा ही अवसर उन्हें सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरि में मिला। ऐसे हिंसक पशुओं से ना तो आचार्यश्री डरते थे और ना ही हिंसक पशु उन पर क्रोध करते थे। यह थी क्षमा एवं वात्सल्य की भावना। अहिंसक के चरणों में सिंह का समर्पण मैत्री का प्रतीक बन गया। संत के पास पाप-ताप और दीनता का अभिप्राय नहीं ठहर पाता है।

ऐसे महान् तपस्वी सत्य अहिंसा के परम, पुजारी, शांति की मूर्ति कलयुग में सतयुग की गंगा बहाने बाले आचार्यश्री का चातुर्मास १९२८ में कटनी (मप्र.) में हुआ था। कटनी नगर-वासियों का पुण्य जगा था। बताते हैं कि उनका चातुर्मास जिस प्रांगण में हुआ था वहाँ एक सूखा वृक्ष था। चातुर्मास के दौरान वह वृक्ष हरा-भरा हो गया था, इससे आचार्य श्री की बहुत प्रभावना हुई थी। उसके बाद से हमेशा कटनी वालों को जैन साधुओं का सत्संग समागम मिलता रहता है। यह उनके आशीर्वाद का ही फल है।

उस समय दिगम्ब मुद्रा में नगर में निकलना वर्जित था। अतएव आहार के लिए जाते समय दिगम्बर मुनि सामने कपड़ा लगा लेते थे। किन्तु आपने कपड़ा लगाने से अपने गुरु को स्पष्ट मना कर दिया उन्होंने कहा आप मुझे समाधि दे दो परंतु मैं कपड़े का उपयोग नहीं करूँगा तब आहार के समय आजू-बाजू लोग चलते थे। उन्होंने जैन धर्म का खूब प्रचार प्रसार किया, किसी से डरे नहीं।

०८ नवंबर १९५५ को आपने सल्लेखना पूर्वक सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि में समाधि-मरण किया था। अंतिम उपदेश में उन्होंने बताया कि जैन धर्म का मूल सत्य-अहिंसा है। सत्य में सम्यक्त होना है और अहिंसा में सब जीवों का रक्षण होता है इसलिए यही व्यवहार कीजिये।

आचार्य श्री का जन्म ऐसे समय हुआ था जब समस्त समाज इस युग के तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित श्रमण परम्परा के लिए तरस गया था। ऐसे समय में इस महान आचार्य का जन्म लेना मानो घोर अँधेरे में दीपक दिखाना था। इस भौतिकवादी युग में हमें देव और शास्त्र के दर्शन तो मंदिर जी में हो जाते थे, किन्तु गुरु के दर्शन 'जो हमारी प्राचीन श्रमण परम्परा के प्रतीक हैं', दुर्लभ हो गये थे। आचार्य श्री द्वारा जैन श्रमण संस्कार ग्रहण करने पर आज की इस २१ वीं सदी में उन्ही के द्वारा पुनर्जीवित दिगम्बरत्व श्रमण परम्परा के साधुओं, मुनि, आर्यिका माताओं के दर्शन लाभ पाकर हम पुण्यार्जन कर रहे हैं। श्रमण परम्परा के लिए उनका बहुत बड़ा उपकार है। इस दुष्माकाल में विषय भोग की सरिता बह रही है। सब उसमें डुबकी लगाना चाहते हैं। आगम भी कहता है कि इस काल की ऐसी ही प्रवृत्ति होगी। फिर भी आचार्य श्री का अपूर्व व्यक्तित्व, आसाधारण रूप से संयम के भावों को जगा रहा है। यही उनका बहुत बड़ा योगदान है।

भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक महोत्सव (मुकुट सप्तमी) पर विशेष आलेख :

चिंतामणि तीर्थंकर पार्श्वनाथ

-डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

जैनधर्म के लोकप्रिय २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की निर्वाण कल्याणक तिथि श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सम्पूर्ण भारतवर्ष की जैन समाज मंदिरों में प्रात: वेला में निर्वाण लाडू चढाकर अपनी आस्था प्रकट करते हैं तथा इस दिन मुकुट सप्तमी का व्रत रखा जाता है।

जैनधर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म बनारस के राजा अश्वसेन और रानी वामादेवी के यहां पौष कृष्ण एकादशी के दिन हुआ था। वर्तमान जैन परंपरा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ बहुत ही लोकप्रिय और श्रद्धालुओं की आस्था के प्रमुख केन्द्रबिन्दु है । पार्श्वनाथ ने विवाह नहीं किया था। तीस वर्ष की अवस्था में एक दिन राजसभा में वे अयोध्या नरेश जयसेन के दूत से 'ऋषभदेव चरित' सुन रहे थे। सुनते ही उन्हें वैराग्य हो गया। तब अश्व वन में जाकर उन्होंने जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। तीन माह तक कठोर तप किया।

उन्होंने पौष कृष्ण की ११वीं तिथि को दीक्षा ली और श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सम्मेदशिखरजी पर्वत पर मोक्ष प्राप्त कर लिया। वर्तमान में सम्मेदशिखरजी झारखंड प्रांत में स्थित है। यह स्थान जैन समुदाय का सबसे प्रमुख तीर्थस्थान है। जिस पर्वत पर पार्श्वनाथ को निर्वाण प्राप्त हुआ वह पारसनाथ पर्वत के नाम से जाना जाता है। लाखों श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आते हैं। इस तीर्थ के बारे में कहा जाता है कि 'एकबार वंदे जो कोई, ताहि नरक-पशु गति नहिं होई।' अर्थात् जो भी श्रद्वालु सच्चे भाव से एकबार इस तीर्थ स्थान के दर्शन कर लेता है फिर उसको नरक और पशु गति प्राप्त नहीं होती, उसे सद्गति प्राप्त होती है। इसलिए पूरे वर्ष इस क्षेत्र पर जैन तीर्थ यात्रियों को आना-जाना लगा रहता है। पार्श्वनाथ भगवान के निर्वाण कल्याणक महोत्सव पर तो भारी भीड़ यहां देखी जा सकती है। उल्लेखनीय है सम्मेदशिखर जी के इस पर्वत की २७ किलो मीटर की यात्रा है इसे श्रद्धालु बडे ही उत्साह से पैदल बिना जूता-चप्पल आदि के पूरी करते हैं। मध्यरात्रि लगभग २ बजे निकलते है और दोपहर तक पर्वत से वापस आ जाते हैं।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ क्षमा के प्रतीक हैं। उनके समय में तापस-परंपरा का प्रचलन था। तप के नाम पर लोग अज्ञानतापूर्वक कष्ट उठा रहे थे। उन्होंने व्यावहारिक तप पर जोर दिया। उन्होंने अपने उपदेशों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह पर अधिक बल दिया। उनके सिद्धांत व्यावहारिक थे, इसलिए उनके व्यक्तित्व और उपदेशों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और उड़ीसा में फैले हुए लाखों सराकों, बंगाल के मेदिनीपुर जिले के सदगोवा और उडीसा के रंगिया जाति के लोग पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानते हैं। पार्श्वनाथ के सिद्धांत और संस्कार इनके जीवन में गहरी जड़ें जमा चुके हैं। इसके अलावा सम्मेदशिखर के निकट रहने वाली भील जाति पार्श्वनाथ की अनन्य भक्त है।

"पार्श्व-युग में अब तक जो जीवन-मूल्य व्यक्ति-जीवन से संबद्ध थे, उनका समाजीकरण हुआ और एक नूतन आध्यात्मिक समाजवाद का सूत्रपात हुआ। जो काम महात्मा गांधी ने अहिंसा को लोकजीवन से जोड़ कर किया, वही काम हजारों वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ ने अहिंसा की व्याप्ति को व्यक्ति तक विस्तृत कर सामाजिक जीवन में प्रवेश दे कर दिया। यह एक अभूतपूर्व क्रान्ति थी, जिसने युग की काया ही पलट दी।

भगवान पार्श्वनाथ की जीवन-घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति, समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं। इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथापूर्व है। हिंसा और अहिंसा का द्वन्द भी हमें इन घटनाओं में अभिगुम्फित दिखाई देता है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लम्बे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया। उनका धर्म व्यवहार की दृष्टि से सहज था, जिसमें जीवन शैली का प्रतिपादन था। राजकुमार अवस्था में कमठ द्वारा काशी के गंगाघाट पर पंचाग्नि तप तथा यज्ञाग्नि की लकड़ी में जलते नाग-नागिनी का णमोकार मंत्र द्वार उद्धार कार्य की प्रसिद्ध घटना यह सब उनके द्वारा धार्मिक क्षेत्रों में हिंसा और अज्ञान विरोध और अहिंसा तथा विवेक की स्थापना का प्रतीक है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने मालव, अवंती, गौर्जर, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, अंग-नल, कलिंग, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, द्रविड, कश्मीर, मगध, कच्छ, विदर्भ, पंचाल, पल्लव आदि आर्यखंड के देशों में विहार किया। उनकी ध्यानयोग की साधना वास्तव में आत्मसाधना थी। भय, प्रलोभन, राग-द्वेष से परे। उनका कहना था कि सताने वाले के प्रति भी सहज करूणा और कल्याण की भावना रखें। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रतिमाएं और मंदिर हैं। उनके जन्म स्थान भेलूपुर वाराणसी में बहुत ही भव्य और विशाल दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। यह स्थान विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है। पार्श्वनाथ जन्म-कल्याणक दिवस पर जहां वाराणसी सहित पूरे देश में जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है, वहीं निर्वाण कल्याणक दिवस पर सम्मेदशिखर जी सहित पूरे देश में निर्वाण लाडू चढाकर धूमधाम से मनाते हैं, इस दिन मुकुट सप्तमी का व्रत रखकर इसे पूरे देश में जैन समुदाय द्वारा पूरी श्रद्धा और उत्साह पूर्वक मनाने की परंपरा है।

गुरू शब्द में ही संपूर्ण ब्रम्हाण्ड समाया हैः मुनिश्री अभयसागर

खुरई- प्राचीन जैन मंदिरजी में विराजमान कानूनविद् संपूर्ण जैन समाज के संकटमोचक ज्येष्ट मुनिश्री अभयसागर जी महाराज ने गुरूपूर्णिमा के अवसर पर विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि गुरू शब्द में संपूर्ण ब्रम्हाण्ड समाया है। अंधकार से प्रकाश की ओर गुरू ही ले जाया करते हैं।

मुनिश्री ने कहा कि नेता की तरह गुरू नहीं हुआ करते, जो अपने अधीनस्थ कार्यकर्ता या पदाधिकारी को आगे बढ़ना नहीं देखना चाहते, हर पल उसकी टाँग खींचने में ही लगे रहते हैं। गुरू तो अपने शिष्य की सफलता में ही अपनी सफलता देखता है। उसके रोम रोम में शिष्य के प्रति करूणा, वात्सल्य, प्रेम का भाव पल्लवित होता रहता है। इसलिए तो गुरू को गोविन्द से भी अधिक महत्व दिया गया है। हम सभी शिष्य बड़े भाग्यशाली हैं कि हमें चलते फिरते तीर्थंकर स्वरूप आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज जैसे गुरू मिले, जिनके दिल में प्राणी मात्र के प्रति करूणा भाव संपूर्ण विश्वके कल्याण की भावना निहित रहती है।

मुनिश्री प्रभातसागर जी महाराज ने कहा कि जब गुरू को आज्ञाकारी अनुशासित एवं संस्कारवान शिष्य मिलता है तब ही उसकी वाणी खिरती है। सच्चा शिष्य तो वह होता है जो गुरू के उपदेश को शिरोधार्य कर उसके बताए हुए मार्ग पर चले। हमारे गुरूवर आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य उन्हें उनके पिच्छीधारी मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक के साथ ही प्रतिभामंडल में अध्ययन करा रही बहिने, ब्रम्हचारी भैया आदि है। श्रावक तो मात्र उनका भक्त होता है। सच्चे देव, शास्त्र गुरू की शरण तो बिरले व्यक्तियों को ही मिल पाती है। गुरू का दर्श भगवान से भी बड़ा होता है। गुरूपूर्णिमा के शुभ अवसर पर आप सभी व्यसन मुक्त जीवन जीने के लिए संकल्पित हों। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए गुरू के बताए मार्ग पर चलने का सतत् प्रयास करें तभी हमारी गुरू पूर्णिमा मनाना सार्थक होगा।

मुनिश्री ने कहा कि भव्य आत्मा में अनन्त ज्ञान, अनंत शक्तियां है। इसे उत्पन्न करने का मार्ग गुरू ही बता सकता है। गुरू आलम्बन है, सहारा है। वृक्ष के आश्रय या आलम्बन से लताएँ ऊपर चढ़ती हैं। इसी प्रकार गुरू का अवलम्बन पाकर शिष्य साधना रूपी वृक्ष पर चढ़ता है। भवन या महल का आधार उसके खम्भे या पिलर हैं। गुरू साधना रूपी महल के पिलर हैं। गुरू साधना की दिव्य दृष्टि पथ देते हैं। चलने वाले के पास यदि दृष्टि है, आँखें खुली हैं, तो वह अपनी मंजिल पर चढ़ जायेगा। नाव से नदी पार की जाती है। गुरू इस जीवन रूपी समुद्र से पार लगाने वाली नाव है। शिष्य की आचार शुद्धि एवं विचार शुद्धि करके उसे जीवन में श्रेष्ठ बनाना गुरू का लक्ष्य रहता है। गुरू कल्पवृक्ष है, कामधेनु है, चिन्तामणि है।

मुनिश्री निरीहसागर जी महराज जी ने कहा कि रोगी को अपना रोग दूर करने के लिए अनुभवी कुशल चिकित्सक की शरण लेनी पड़ती है। छात्र को अपने विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये कुशल प्राध्यापक की जरूरत पड़ती है। इसी प्रकार अपने दोष दुर्गुणों को देखने, अपने आत्म स्वरूप् का अनुभव करने के लिये गुरू की आवश्यकता रहती है। आत्म विद्या विवेक का ज्ञान गुरू से ही सीखा जा सकता है। गुरू के समान हितैषी संसार में और कोई नहीं हो सकता। मनुष्य का मन एक बगीचा है। इसमें दुर्विचारों की वासना और विकारों की कँटीली झाड़ियां, खरपतवार उगते रहते हैं और वह सद्विचारों के पौधों का विकास रोक देते हैं। उनका रस, जीवन तत्व स्वयं चूसकर उन्हें कमजोर और क्षीण बना देते हैं गुरू रूपी माली ज्ञान की, उपदेश की कैंची और कुल्हाड़ी लेकर उन कुविचार रूपी झाड़ झंखाड़ को उखाड़कर बाहर फेंकते हैं। उसे उपदेशों का खाद-पानी देकर शक्ति देते हैं और सुविचारों के सुसंस्कार से, सदगुणों के पौधों से, जीवन रूपी उद्यान को हराभरा एवं सुन्दर बनाते है।

मुनिश्री ने कहा कि गुरू अपने अनुभव, दूरदर्शिता, संयम, चतुराई और बुद्धिमत्ता के बल पर शिष्य के जीवन उद्यान में, उसके मस्तिष्क में, सद्विचारों के बीज बोता रहता है। गुरू एक ऐसा महान शिल्पी है, जो निष्काम भाव के साथ शिष्य रूपी पत्थर को भावी भगवान की सिद्धि दिलाने में ही अपना कर्तव्य समझता है। इस प्रकार गुरू शिष्य के प्रति निष्काम भाव से महत्वपूर्ण दायित्व को पूर्ण करता है।

हर पाषाण में भगवान छुपा होताहैः मुनिश्री अभयसागर

खुरई। प्राचीन जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री अभयसागर महाराज ने वीर शासन जयंती पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान महावीर को केवल ज्ञान की प्राप्ति के उपरांत ६६ वें दिन उनकी वाणी खिरी। भगवान महावीर के समवशरण में गौतम गणधर का आज के दिन अभिमान चकनाचूर हुआ था। भगवान महावीर के प्रथम शिष्य बनने का परम सौभाग्य गणधर स्वामी को मिला।

२५४५ वर्ष पूर्व से ही हम भगवान महावीर की देशना सुन रहे हैं परंतु अभी तक हमारा कल्याण क्यों नहीं हुआ इस पर विचार करना जरूरी है।

मुनिश्री ने कहा कि भगवान महावीर की वीर शासन जयंती पर हम सभी यहां पर एकत्रित हुए हैं। हममें और महावीर में कोई मौलिक अंतर नहीं है, अन्तर तो इतना है कि हम पाषाण रह गए और वे भगवान हो गए। हर पाषाण के अंदर भगवान छिपा होता है। हम कहते

हैं कि शिल्पी पाषाण से भगवान बनाता है लेकिन वास्तविकता यह है कि शिल्पी बनाता कुछ नहीं है। शिल्पी केवल इतना करता है कि जो कुछ अनावश्यक है उसे काट-छांटकर अलग कर देता है, जिससे उस पाषाण का जो भव्य स्वरूप है वह स्वयमेव प्रकट हो उठता है और उसकी अभिव्यक्ति का नाम भगवत्ता की उपलब्धि है। हम सबके भीतर वही भगवत्ता है।

मुनिश्री ने कहा कि भगवान महावीर आए और चले गए लेकिन हम सबके लिए यह कह गए कि तुम्हारे भीतर भी वही भगवत्ता है जिसकी तलाश में तुम इधर-उधर भागते हो। वह भगवत्ता कहीं बाहर नहीं तुम्हारे भीतर ही है। उसे पहचानने की कोशिश करो, उसकी अभिव्यक्ति हो जाएगी लेकिन तभी होगी जब तुम अपने आपको पहचानोगे और उसमें जो अनावश्यक है, व्यर्थ है उसे अलग करोगे।

मुनिश्री प्रभातसागर महाराज ने कहा कि दुनिया में वीर तो बहुत मिल जाते हैं लेकिन महावीर बिरला होता है। महावीर वे होते हैं जो अपने आपसे लड़ते हैं और अपने विकारों को जीतते हैं। वीर वह होता है जो दूसरों से लड़ता है और दूसरों पर विजय पाता है। दूसरों को जीतना, दूसरों से लड़ना और दूसरों को हराना बहुत सरल है, अपने आपको जीतना बहुत कठिन है। यह विडम्बना है कि लोग दूसरों से तो जीत जाते हैं लेकिन खुद से हार जाते हैं। हमारी स्थिति आज तक यही रही है हम दूसरों से जीतते रहे हैं पर खुद से हारे हैं। अपने ही सामने हम अपने आपको पराभूत किए हैं।

मुनिश्री निरीहसागर महाराज ने कहा कि अपने आपको जीतो, आत्मजयी बनो, परजयी नहीं। हमारी आत्मा में बहुत बड़े-बड़े शत्रु बैठे हैं, बाहर के शत्रुओं के प्रति हम फिर भी जागरूक रहते हैं, चैबीसों घंटे चैकन्ने रहते हैं कि कोई शत्रु हमें हानि न पहुंचा दे लेकिन अपने भीतर के शत्रुओं का हमें कुछ भान नहीं है। प्रवचन के पूर्व भगवान महावीर की पूजन संपन्न हुई। आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के चित्र का अनावरण करने का सौभाग्य भोपाल, इंदौर, अशोकनगर, गुना, सागर, बीना आदि स्थानों से आए श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ। ज्ञानदीप का प्रज्जवलन पाठशाला की बहिनों ने किया। प्रवचन सभा का संचालन रिंकू मुल्ला एवं सहयोग संकलन अशोक शाकाहार ने किया।

भगवान महावीर स्वामी ने विश्वमैत्री का शंखनाद किया-आचार्य गुप्तिनंदी

वीर शासन जयंती पर बालाजीनगर में व्याख्यान देते हुए आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ने कहा कि भगवान महावीर स्वामी ने अपने माता-पिता का विवाह संबंधी प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। वे आजन्म बाल ब्रह्मचारी रहे। इसलिए वर्तमान के चौबीस तीर्थंकरों में पाँचवें बालयति तीर्थंकर के नाम से विख्यात हुए। आत्मकल्याण के साथ जगत कल्याण की मंगल भावना से उन्होंने निर्वाण दीक्षा अंगीकार कर ली। दीक्षा ग्रहण के बाद वे सिद्ध बनने से पूर्व तक दिगंबर जैन मुनि की मुद्रा में ही रहे। मुनि बनने के बाद अखण्ड मौन साधना में रहते हुए उसी अवस्था में हथकड़ी और बेढियों से बंधी हुई कारागृह में रोती हुई राजकुमारी महासती चन्दनबाला से आहार लेकर उसे बंधनों से मुक्त कराया। चण्डकौशिक सर्प का उद्धार किया। इसके अलावा अपने जीवन में लाखों, करोड़ों,असंख्यात लोगों का उद्धार किया। बारह वर्ष की कठोर तपस्या के बाद ऋजुकूला नदी के किनारे जृम्भिक ग्राम के उद्यान में उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। विश्व की विशाल धर्मसभा में उनकी दिव्यध्वनि७१८भाषाओं में एक साथ निकलती थी। इसके अलावा भी अन्य सभी देव,मनुष्य,तिर्यंच तीनों गतियों के समस्त जीवों कोअपनी-अपनी भाषाओं में अच्छे से समझ में आ जाती थी। श्री महावीर स्वामी ने सारे संसार को पाँच पाप को त्यागने का उपदेश दिया। और पाँच महाव्रत या पाँच अणुव्रत के पालन करने का उपदेश दिया। अणुबमों की होड़ से अणुव्रत ही बचा सकते हैं। आज शास्त्र कम हो गए और विश्व के सभी देशों में शास्त्रों को छोड़कर अस्त्र-शस्त्रों को बढाने की प्रतिस्पर्धा चल रही है। फैशन के बाजार में अब शील,संयम बौने से हो गए हैं। आज संसार को विश्वयुद्ध से बचाने के लिए विश्व की युवा शक्ति को आगे आना होगा। अपने निजी स्वार्थों को तिलांजलि देते हुए प्रभु महावीर स्वामी के मार्ग का अनुसरण करने के लिए युवाशक्ति आगे बढ़े। उनके समान निर्ग्रंथ मुनि का वेष धारण कर अपने आचरण से, अपने सद्व्यवहार से सारे विश्व में अहिंसा सत्य,अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का प्रचार करते हुए विश्व में शांति,मैत्री,प्रगति की रफ्तार तेज कर दें। आज सारे विश्व का एक तिहाई धन रक्षा बजट में लग रहा है और युद्ध के बाद बचें हुए घायलों पर और उजड़े चमन को बसाने के लिए शेष धन और शक्ति व्यर्थ चली जाती है।

अंत में वैधव्य, अनाथ बचपन, अशिक्षा, भुखमरी, बेरोजगारी ही बचे हुए इंसान के हाथ लगती है। ऐसे युद्धोन्माद को खत्म करने के लिए युवाशक्ति हर प्रकार से माहौल तैयार करें। सदाचार की लहर लाने के लिए जिन पिक्चरों,धारावाहिकों या शो में अश्लीलता, हिंसा, बलात्कार, अत्याचार, शोषण, आतंकवाद, चोरी, डकैती करने की शिक्षा मिलती हो उन सभी का बहिष्कार करें। स्वयं देखना बंद करें। ऐसे समाचारों को पढते, सुनते या देखते हुए खाना पीना नहीं करें। क्योंकि जिन विचारों के साथ आप खाना पीना करेंगे या भोजन बनायेंगे वैसे ही हिंसक, कामुक, कपटी और क्रूर आपका मन बनेगा। भगवान महावीर स्वामी का जिओ और जीने दो का संदेश सदा याद रखें। परस्परोपग्रहो जीवानाम् का सूत्र अपनायें। अर्थात जीव परस्पर में जीवों का उपकार करें। अपकार किसी का नहीं करे। इस प्रकार भगवान महावीर की वाणी मात्र जैनों का ही नहीं बल्कि जन-जन का कल्याण करने वाली है। उनका अनुसरण करके ही हम भी उनके समान बन सकते हैं। उसकी शुरुआत आज से ही कर दें। अच्छे संकल्प को कल पर नहीं डालें।

युगप्रमुख आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज

- पं.महेन्द्रकुमार जैन, शास्त्री

तुभ्यं नमः चरणचक्रधराय धीमन्,
तुभ्यं नमः परममार्गसुमोक्षगामिन्।
तुभ्यं नमः ध्यानतपोधिराजन्,
तुभ्यं नमः विमलसिन्धुगुणार्णवाय॥
तुभ्यं नमः परमशान्ति विधायकाय,
तुभ्यं नमः निमित्तबोध विशारदाय।
तुभ्यं नमः जिनभक्ति परायणाय,
तुभ्यं नमः विमलसिन्धु गुणार्णवाय॥

जिनधर्म प्रभावना में वात्सल्य रत्नाकर सन्मार्ग दिवाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का अद्वितीय स्थान है। वे जन आलोचनाओं के बीच भी आदर्श, संग के बीच भी निःसंग, आगम शास्त्रों की आज्ञा में चलने से आज्ञा सम्यक्त्व के साथ आज्ञाविचय धर्मध्यान के साधक, सबके सुख-दुःख सुनकर भी अपाय विपाक विचय ध्यान के चिन्तक, संस्थान विचय द्वारा चंचल मन को सैर कराने वाले, उपसर्ग परीषह विजेता, सम्यग्दर्शन के आठ अंग परिपालक थे।

''संत हृदय नवनीत समाना'' की उक्ति पूज्य आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के जीवन पर सम्पूर्णतया लागू होती है। वे करुणा दया, वात्सल्य से ओतप्रोत थे। उनके क्रियाकलापों, वाणी और मुखमुद्रा से अनुपम व अद्वितीय वात्सल्य छलकता था। उनके जीवन में सरलता, सहजता, स्वभाव से ही शोभायमान होती थी। एक बार जिसने भी दर्शन किये वह चुम्बक की तरह खिंचा चला आता था व पुनः पुनः दर्शन की भी इच्छा रखता था। एक मोमबत्ती जिस प्रकार स्वयं जलती है व दूसरों को भी प्रकाशित करती है; उसी प्रकार आचार्य श्री अपने शिष्यों को अपने ज्ञान, ध्यान व तप साधना के द्वारा प्रकाशित करते थे।

आपके सान्निध्य को पाकर अनाथ भी सनाथता को प्राप्त हो गया। सामान्य व्यक्ति भी श्रीमन्त बन गया और धर्मात्मा यतिपने को प्राप्त हो गये और उन्होंने अपने जीवन को खुशहाल बना लिया। पूज्य आचार्य श्री में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर जी महाराज के

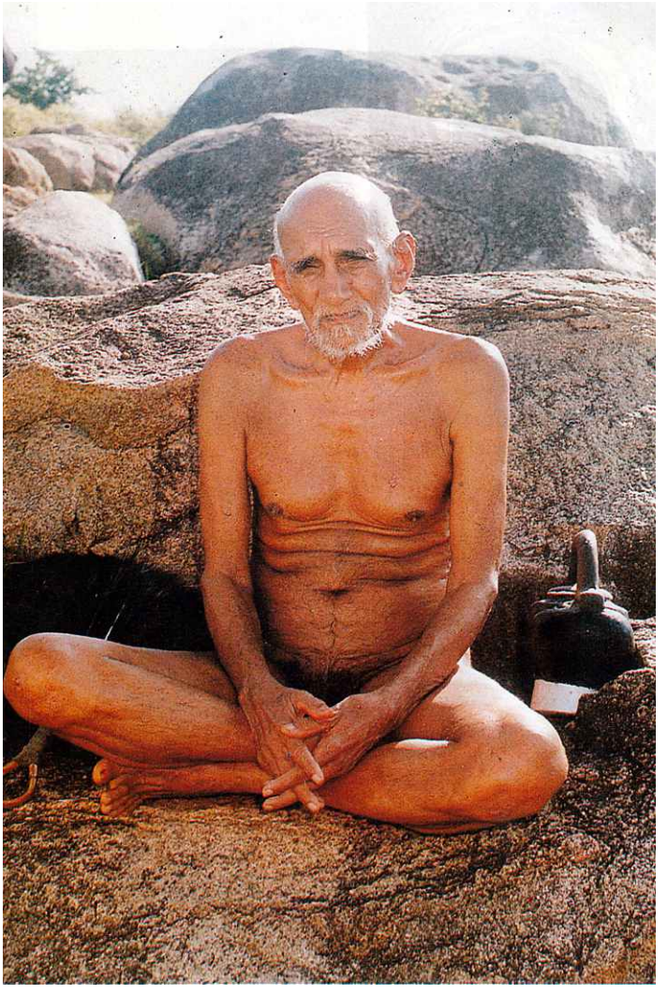

समान शान्ति व वीरता आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज जैसी धीरता, आचार्य कल्प श्री चन्द्रसागर जी महाराज जैसी शूरता, आचार्य सुधर्मसागर महाराज जी की जैसी निमित्तज्ञान प्रखरता एवं आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज जैसी परम सहिष्णुता विद्यमान थी।

इनकी विद्याभूमि मुरैना में स्थित श्री गोपाल दिगम्बर जैन सिद्धान्त संस्कृत महाविद्यालय रही। वहाँ के अध्ययन काल के कई प्रसंग हैं जिसमें इनकी शूरवीरता एवं निडरता झलकती है। अध्ययनकाल में भी जिनपूजा भक्ति माला जपना ये इनके जीवन के अंग बन गये थे। अध्ययन में भी अव्वल आते थे। प्रथमानुयोग के ग्रन्थों के अध्ययन करने में इनकी विशेष रुचि थी, वे कहा करते थे कि सब अनुयोगों में कहीं बादाम है, कहीं दूध है, कहीं शक्कर है, कहीं

इलायची है किन्तु प्रथमानुयोग में खीर हैं, प्रथमानुयोग से धैर्य साहस व आत्मबल बढ़ता है। अध्ययन करने के पश्चात् व्यापार करने हेतु प्रातः ४-५ बजे निकल जाते थे, फिर भी कभी पूजा-अभिषेक नहीं छोड़ते थे।

ब्रेक रहित साइकिल-

इनके पास ब्रेक रहित साइकिल थी। व्यापार करते करते लम्बा समय बीतने पर भी कहीं धोखा नहीं हुआ। इनके पास ब्रेक रहित साइकिल तो थी किन्तु शरीर ब्रेक रहित नहीं था। मन पर संयम रूपी ब्रेक लगा हुआ था। भक्ति व श्रद्धा रूपी ब्रेक से जीवन रूपी नौका को आगे बढ़ाया।

काया में प्रभुता-

आचार्य महाराज का निरन्तर मुस्कराता हुआ चेहरा और खिलता बदन उनकी अन्तरंग विशुद्धता को बिखेरता था। चेहरे पर उत्साह, बालकवत् निशंक, निश्छलवृत्ति आपके रोम-रोम से टपकती थी। आप के दाहिने पैर में पद्म चक्र था। पद्म चक्र यह सूचित करता है कि ये महापुरुष निरन्तर घूमते रहेंगे। और अपनी आत्मसाधना से स्व और पर का कल्याण करेंगे। इसी प्रकार आचार्य श्री वक्षस्थल पर भी श्रीवत्स का चिह्न देखा गया जो आचार्य श्री की अपूर्व साधना, धीरता एवं वीरता को सूचित करता है। वर्तमान के भीषण कलियुग में युवा, वृद्ध, शिक्षित व अशिक्षित सभी प्रकार के संघस्थ त्यागियों का संतानत् पालन करना अपूर्व सहिष्णुता एवं धीरता का ही परिचायक है। इनका साहस व शक्ति तो अपूर्व थी। दीर्घ उम्र होने पर भी उनके चेहरे पर कभी थकान नहीं महसूस होती थी।

साधु जीवन के दो श्रृंगार-

उपसर्ग व परीषह जैन साधुओं के जीवन के दो श्रृंगार हैं; ये आत्मा के आभूषण हैं-उपसर्ग परकृत होते हैं और परीषह स्वतः सहज सहे जाते हैं।

अद्भुत उपसर्ग विजयी-

1. दो सिंहराजों का मिलन- एक वास्तविक शेर रात्रि को जंगल में आया। आचार्य श्री को ध्यानस्थ, शान्त मुद्रा को देखकर वापिस चला गया। विजय आत्मार्थी सिंहराज आचार्य श्री की हुई।

2. अजगर- रास्ते में चित्ती अजगर मुँह फाड़े सामने आया, सभी घबड़ा गये किन्तु योगिराज की साधनामय प्रखर ज्योति के सामने वह टिक न सका। वह चुपचाप खिसक गया।

3. सर्प तो मित्र है- अकबर चौक की घटना है। एक सर्प आया, गोदी में लोटपोट करता रहा और सारे शरीर पर घूम फिर कर चला गया मानो इनके दर्शन करने आया हो।

हर मर्ज के कुशल वैद्य थे-

आचार्य श्री भी निरन्तर यही भावना रहती थी कि संसार के सभी प्राणी सुखी हो, सभी नीरोगी हों, सभी कल्याण को प्राप्त हों, किसी को भी किसी प्रकार का दुःख नहीं हो। देखिये आचार्य श्री की स्थिति ऐसी थी कि-

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी,
यस्यां जागर्ति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥

जिस समय संसार सोता है उस समय आचार्य श्री अध्यात्मरस का पानकर आत्मोत्थान में क्रीड़ा करते थे। उनके समीप में रहने वाला ही इनकी अलौकिक चर्या का अनुमान लगा सकता था। ७५ वर्ष की अवस्था में भी उन्हें प्रमाद नहीं था।

संस्मरण-

१. जब मैं स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी में पढ़ता था तब एक बार श्री सम्मेद शिखर जी की वन्दना करने गया, तीन वन्दना करने के बाद मैं जब नीचे उतरा तो एक कोठी में एक मुनि विराजमान थे, मैं उन्हें नमोस्तु कर बैठ गया, मेरे बैठते ही वह बोले कि पढ़ता है? मैंने कहा कि हाँ, पढ़ता हूँ, तो फिर वह बोले कि मंझला है; मैंने कहा कि हाँ, मँझला हूँ। वे बोले कि तू घर को तो कुछ करेगा नहीं, मेरे साथ हो जा, तो मैंने कहा कि क्या करूँगा ? तो वे बोले कि मैं नंगा हूं, तो तेरे को भी नंगा करूँगा (मुनि बनाऊँगा)। तो मैंने कहा कि मुझे नंगा नहीं होना है। वह चुप हो गये और मैं भी चुप हो गया। थोड़ी देर बाद मैं उठकर जाने लगा तो वह बोले कि जा, जा तेरा काम हो जायेगा। मैं वाराणसी वापिस आ गया। मेरी ९०रु. माह की सरकारी छात्रवृत्ति बंद हो गयी थी। १५ दिन बाद वह एक साथ १० माह की मंजूर होकर आ गयी। तब मेरे दिमाग में आया कि ये निमित्त ज्ञानी आचार्य श्री विमलसागर जी का आशीर्वाद फलित हुआ।

२. जब आचार्य श्री जयपुर से विहार करते हुए मुरैना आये, चूँकि मुरैना से ही उन्होंने स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी, उनका लगाव विद्याभूमि के प्रति का था अतः बोले कि तीन दिन

रुकूंगा। तब मैंने कहा कि महाराज श्री आप कम से कम १५ दिन रुकेंगे तो वह बोले कि तुम कैसे कह रहे हो? मैं चुप रह गया। गर्मी का मौसम था, मैं उनकी बहुत ही सेवा करता था और दोपहर १ से २ बजे तक जब वे लोगों के दुःख-दर्द को दूर करने के लिए रास्ता बताते थे तब मैं उनके ही पास रहता था। कुछ दिनों बाद महिलाओं की कानाफूसी सुनकर मैंने उस समय जाना बंद कर दिया। दो दिन बाद आचार्य श्री ने पूछा कि वे पण्डित जी कहाँ गये, उनको बुलाओ। मुझे बुलाया गया। मैंने अपनी बात बताई। तब वह बोले कि महिलाओं को पूछने आना हो तो आवें अन्यथा नहीं आवें लेकिन तुम प्रतिदिन आया करो। ऐसा सुनते ही सभी चुप हो गयीं। ऐसे थे आचार्य श्री विमलसागर जी विद्वानों से अनुराग रखने वाले।

३. उन्हीं दिनों एक दिन मैं अकेला आचार्य श्री के पास बैठा था। मैंने उनसे पूछा कि महाराज जी, मेरा मकान कैसे बनेगा? वे बोले कि जा, जा बन जायेगा। मैंने कहा कि जगह तो अच्छी मिल नहीं रही है, तो वे बोले कि झूठ बोलते हो, तुमने एक जगह देख रखी है किन्तु उसके दरवाजे के सामने दीवार आती है; तो ऐसा करना कि बगल में जो गली है उस तरफ से दरवाजा कर लेना वास्तुदोष खत्म हो जायेगा। मैंने कहा कि महाराज श्री! रुपया कहाँ से आयेगा तो बोले कि चिन्ता मत कर, तेरा मकान बन जायेगा। फिर मैंने पूछा कि महाराज श्री मेरे गांव के मकान में बहुत सम्पत्ति गड़ी हुई है। वह तुरंत बोले- हाँ, रखी है। तो मैंने कहा कि आपने बिना समय लिए कैसे देख लिया? आप हमारा घर इतनी जल्दी देख भी आये? वह बोले कि हाँ, तो मैंने प्रश्न किया कि महाराज श्री! आप यह बतायें कि मेरे मकान में कितने दरवाजे हैं? वे बोले कि तीन दरवाजे हैं। मैंने कहा कि मेरे मकान में दो ही दरवाजे हैं इसका मतलब कि आप हमारे घर गये नहीं, तो वह बोले कि तुम याद करो कि तुम्हारे घर में कितने दरवाजे हैं, तब मैंने ध्यान दिया कि बाद में बड़े भाई सा. ने एक दरवाजा और खुलवा दिया था। तब मैंने माफी मांगी, फिर मैंने कहा कि हाँ, महाराज जी तीन ही दरवाजे हैं।

फिर मैंने पूछा कि महराज श्री! मेरे घर में अटूट सम्पत्ति छिपी हुई है? क्या! सही है? वे बोले कि हाँ बहुत है। फिर मैंने निवेदन किया कि तो फिर महाराज श्री उसको मिलने का उपाय भी बता दीजिए; तब वे बोले कि अब नहीं बताऊँगा। मैंने भी अधिक कुछ नहीं पूछा।

आचार्य श्री विमलसागर जी विषयक कुछ तथ्य-

सन् १९५२, मुनिदीक्षा, श्री सोनागिर जी

सन् १९६०, आचार्य पद, टूण्डला

सन् १९६१, चारित्रचक्रवर्ती (उपाधि) मेरठ

सन् १९७३, निमित्तज्ञानभूषण, श्री सम्मेद शिखर जी

सन् १९७९, सन्मार्ग दिवाकर, पं. श्री मक्खनलाल जी शास्त्री, मुरैना द्वारा श्री सोनागिर जी में

सन् १९८३, करुणानिधि, औरंगाबाद

सन् १९८५, वात्सल्यमूर्ति, लोहारिया में

सन् १९८७, खण्डविद्याधुरन्धर,जयपुर

सन् १९८९, युगप्रमुख चारित्र शिरोमणि, श्री सोनागिर जी

सन् १९९०, हीरक जयंती महोत्सव, श्री सोनागिर जी

सन् १९९१, कालिकाल सर्वज्ञ, श्री सोनागिर जी

सन् १९९४, वात्सल्य रत्नाकर

1. व्यवहारकुशल प्रतिष्ठाचार्य- राजमल्ल ग्राम, फिरोजाबाद के पास, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में डाकू सरदार से ध्वजारोहण कराकर सारी जिम्मेदारी (कि सुई भी नहीं गुमे) दी।

2.कुशल वैद्य - एक अम्मा जी को चूल्हे की राख की पुड़िया बनाकर देना और बच्चे का स्वस्थ हो जाना।

3. ब्रह्मचर्यव्रत धारण- मुनि वीरसागर जी महाराज को आहार के पश्चात् पीछी (ब्रह्मचर्य व्रत लेने पर ही) देना।

4. परिग्रह का खण्डन- ब्र. नेमीचन्द्र जी मोरेना गये, पं. मक्खनलाल जी शास्त्री को अपनी प्रतिज्ञा सुनाई। पं. मक्खनलाल शास्त्री ने कहा कि हमारा विद्यालय धन्य हैं जो आप हमारे विद्यार्थी हो। दीक्षा के लिए चारित्रचक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर जी के पास ही जाना। आचार्य श्री के समझाने पर उन्होंने आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज से दीक्षा लेना स्वीकार किया।

अभिषेक एवं पूजन करना अनिवार्यः मुनिश्री प्रभातसागर

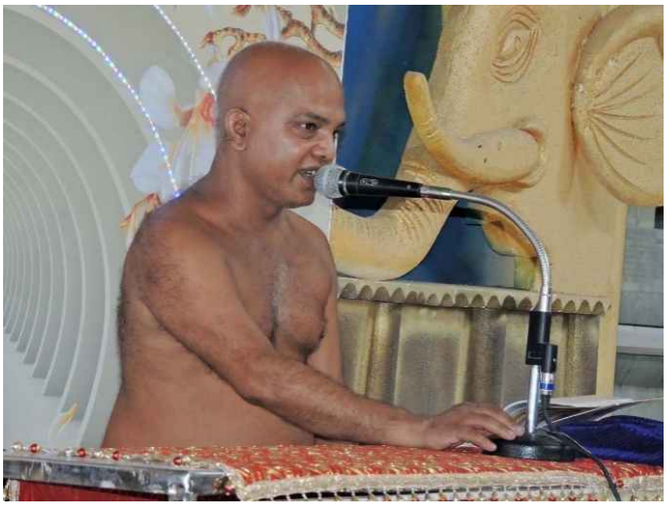

खुरई- प्राचीन जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री प्रभातसागर जी महाराज ने चातुर्मास के मंगल कलश की स्थापना की पूर्व बेला में शुक्रवार को विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए अभिषेक एवं पूजन के महत्व को प्रतिपादित किया। मुनिश्री ने बताया कि अभिषेक और जिनपूजा जिनत्व के अत्यंत समीप आने का उपक्रम है। जिनालय मानों एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला है जहां जिनबिंब के सम्मुख जाकर हम अभिषेक और पूजन के द्वारा स्वयं को निर्मल बनाने का प्रयोग करते है। अभिषेक को पूजा का एक अंग माना गया है। अभिषेक पूर्वक ही पूजा संपन्न होती है। प्रासुक जल की धारा जिनबिंब के ऊपर इस तरह प्रवाहित करना जिससे कि जिनबिंब पूरी तरह अभिसिंचित हो सके- यह अभिषेक कहलाता है।

मुनिश्री ने कहा कि जैनाचार्यों ने चार तरह के अभिषेक का उल्लेख किया है- जन्माभिषेक, राज्याभिषेक, दीक्षाभिषेक, चतुर्थाभिषेक या प्रतिमाभिषेक। तीर्थंकर बालक को सुमेरूपर्वत पर स्थित पाण्डुकशिला पर ले जाकर जो क्षीरसागर के जल से अभिसिंचित किया जाता है वह जन्माभिषेक कहलाता है। तीर्थंकर कुमार का राजतिलक के अवसर पर जो अभिषेक किया जाता है वह राज्याभिषेक कहलाता है। तीर्थंकर का जिनदीक्षा लेने से पूर्व जो अभिषेक किया जाता है वह दीक्षाभिषेक कहलाता है। विधि-विधान पूर्वक प्रतिष्ठित किए गए जिनबिंब पर जो अभिषेक किया जाता है वह चतुर्थाभिषेक या प्रतिमाभिषेक कहलाता है। अत: नित्य-पूजन से पूर्व जो जिनबिंब का अभिषेक होता है वह चतुर्थाभिषेक या प्रतिमाभिषेक है।

मुनिश्री ने कहा कि अभिषेक की परंपरा अनादि-निधन है। चतुर्निकाय के देव अष्टान्हिक पर्व में ननन्दीश्वर द्वीप में जाकर चारों दिशाओं के अकृत्रिम चैत्यालयों में क्रमष: दो दो प्रहर करके चैबीसों घंटे भगवान का अभिषेक एवं पूजन करते हैं। यह बात बड़ी महत्वपूर्ण है कि सौधर्म आदि इंद्र और सभी देवगण विदेह क्षेत्र में सदा विद्यमान रहने वाले तीर्थंकर के कल्याणक एवं साक्षात् दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होने पर भी अकृत्रिम चैत्यालयों में भक्तिभाव से अभिषेक करने जाते हैं और स्वयं को धन्य मानते हैं।

मुनिश्री ने कहा कि असल में, अभिषेक के दौरान जिनबिंब के अत्यंत निकट आने और भावविभोर होकर भगवान का स्पर्श करने का सुखद अवसर प्राप्त होता है जिससे भावों में बड़ी निर्मलता आती है मन गदगद हो जाता है और जीवन की सार्थकता मालूम पड़ती है। अभिषेक का उद्येश बताते हुए लिखा गया है कि हे भगवान आप सहज ही परम पवित्र हैं। आपकी पवित्रता के लिए मैंने अभिषेक नहीं किया। मैंने तो स्वयं को राग-द्वेष रूप मलिनता से मुक्त करने के लिए आपके पवित्र बिंब पर जलधारा प्रवाहित की है और क्षण भर को समस्त पापाचरण छोड़ करके मानो आपका साक्षात् स्पर्श करने का पुण्य अर्जित किया है। इस तरह अभिषेक आत्म-निर्मलता के लिए किया गया एक अत्यंत महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। अभिषेक के दौरान उच्चारित मंत्रों से भक्ति और जिनबिंब के स्पर्श से पवित्र हुआ सुगंधित जल गंधोदक कहलाता है जिसे अपने संचित पापों का क्षय करने की उत्तम भावना से नेत्र और ललाट पर धारण किया जाता है। अभिषेक एवं पूजन करने से व्यक्ति का मोक्ष मार्ग प्रशस्त हो जाया करता है।

जो व्यवहार हमें पसंद नहीं वह व्यवहार दूसरों के साथ कदापि न करेंः मुनिश्री प्रयोगसागर

बीना- सिंधी धर्मशाला में आयोजित चातुर्मास के मंगल कलशों की स्थापना पर आयोजित विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री पवित्रसागर जी महाराज एवं मुनिश्री प्रयोगसागर जी महाराज ने चातुर्मास के महत्व को प्रतिपादित किया। ज्येष्ट मुनिश्री पवित्र सागर जी महाराज ने कहा कि धर्म आराधना के लिए वर्षाकालीन चातुर्मास किया जाता है। जैन धर्म में सूक्ष्म जीवों की हिंसा न हो उसके लिए भी सतत प्रयास निरंतर चलते रहते है। संसार के समस्त प्राणियों को अपनी आत्मा के समान मानना अहिंसा है। आत्मा में मोह और राग-द्वेष की उत्पत्ति होना हिंसा है तथा इनका उत्पन्न न होना अहिंसा है। जो तुम अपने लिए चाहते हो, वहीं दुनिया के लिए चाहो और अपने लिए नहीं चाहते हो, वह दूसरों के लिए भी मत चाहो, यह भी अहिंसा है। महावीर जिसे अहिंसा कहते हैं, बुद्ध उसे करूणा और ईसा उसे प्रेम कहते है। ये तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं, सभी बुराइयों का त्याग अहिंसा है। जिसके जीवन में उदारता है, वह अहिंसक है।

मुनिश्री प्रयोग सागर जी महाराज ने कहा कि किसी भी जीव को मारना नहीं, अहिंसा है। प्राणीमात्र के प्रति दया, करूणा एवं मैत्री भाव

मंचासीन मुनि संघ

मंगल कलश स्थापना सभा में उपस्थित श्रद्धालु

रखना, सभी धर्मों का महान सिद्धांत है। संसार के सभी जीव सुखी रहें, कोई किसी को नहीं सताए, यह सभी धर्मों का मुख्य उपदेश है। जो व्यवहार हमें पसंद नहीं, वैसा व्यवहार हम दूसरों के साथ कदापि न करें। यह अहिंसा का एक पहलू है। किसी भी प्राणी की हत्या करना, सबसे बड़ा भयंकर पाप है। वेद पुराणों में भी स्पष्ट उल्लेख है कि दूसरों को पीड़ा पहुंचाना, सबसे बड़ा पाप है। बाइबिल में भी कहा गया है (THOU SHALL NOT KILL) तुम किसी की हत्या मत करो। हिंसा मानव का मूल स्वभाव नहीं है, यह तो बाह्य कारण से उत्पन्न दोष है। हिंसा पशुता है और अहिंसा मनुष्यता। अहिंसा, संसार के समस्त प्राणियों के जीवन रक्षा की मंगल कामना करती है। इसमें विश्व मंगल का भाव निहित है। अहिंसा अमृत है। प्राणी मात्र की रक्षा के लिए एवं आत्म कल्याण के लिए मुनि-आर्यिका एक स्थान पर रूक कर चातुर्मास करते हैं। इससे समस्त नगरवासियों को धर्म लाभ लेने का अवसर प्राप्त हो जाता है। प्रवचन के पूर्व आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण करने का परम सौभाग्य मुनिद्वय के गृहस्थ जीवन के माता-पिता एवं रिश्तेदारों को प्राप्त हुआ। ज्ञानदीप का प्रज्जवलन दूरस्थ अंचल से आए ब्रम्हचारी भैयाजी एवं डॉ. नीलम दीदी सागर, डॉ. रश्मि दीदी बीना ने किया। प्रवचन सभा का संचालन ब्र.विजय भैया लखनादौन संकलन अशोक शाकाहार ने किया।

जन्म दिवस को चेतावनी दिवस के रूप में लेवें: मुनिश्री अभयसागर

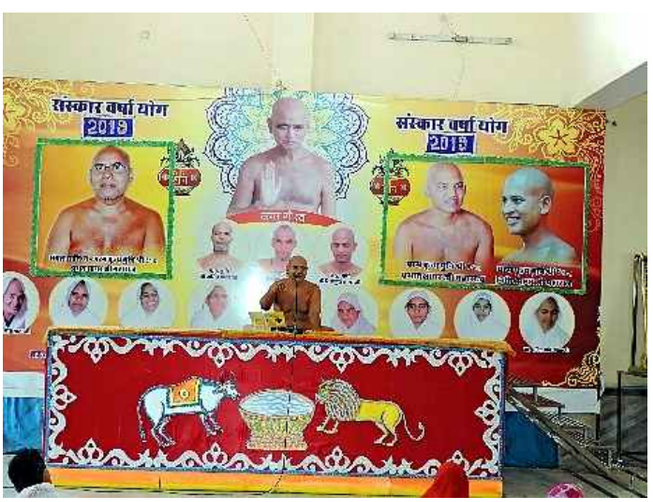

खुरई- प्राचीन जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री अभयसागर जी महाराज ने विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जन्म और मृत्यु दुनिया के दो महारोग हैं, जिससे प्रत्येक प्राणी पीड़ित है। डॉक्टर रोग का उपचार कर सकते हैं, लेकिन मृत्यु का नहीं। मृत्यु का तो, एक ही उपचार है और वह है- मोक्ष। मृत्यु रोग है, तो जन्म भी रोग है। जन्म रोग है, इसलिए जन्म दिवस पर बहुत ज्यादा हर्षित होना उचित नहीं, बल्कि जन्म दिवस को एक चेतावनी दिवस के रूप में लेवें। दरअसल हर जन्म दिवस एक चेतावनी है कि जीवन के इतने बसंत मुट्ठी की पकड़ से फिसल चुके है। अब जो कुछ थोड़ा समय शेष है, उसे धर्म साधना के जरिये, उत्तम बना लें, वर्ना जीवन के अन्त में पछताना पड़ेगा। जन्म दिन पर केक काटना, मोमबत्ती बुझाना, खाना-पीना, मौज-मस्ती करना पाश्चात्य सँस्कृति है, भारतीय सँस्कृति में तो जन्म दिन पर दीन-दुःखियों को दान आदि दिया जाता है। जन्म दिवस की चेतावनी को समझें और अर्थी उठने से पहले जीवन के अर्थ को समझ लें और मोक्ष को लक्ष्य कर धर्म-साधना में जुट जावें।

मुनिश्री ने कहा कि राजा राणा छत्रपति हाथिन के असवार, मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार। आदमी कहता तो यह है कि-

भाई सबको ही आज या कल मर जाना है, लेकिन उसकी क्रिया कलाप को देखकर तो लगता है कि वह कभी नहीं मरेगा। मनुष्य को खूब से खूब सौ साल जीना है, मगर वह धन सामग्री हजार साल की एकत्रित कर रहा है, यह कैसी बिडम्बना है। मनुष्य का जीवन पानी पर खींची गई लकीर के समान है। पता नहीं कब मौत आ जाये। अतः सौ काम छोड़कर सत्संग में बैठना चाहिए और हजार काम छोड़कर धर्म-ध्यान करना चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया तो बहुत पछताना पड़ेगा। चिंतन करें! मनो सोमवार को जन्म हुआ, मंगलवार को बड़े हुए, बुधवार को विवाह हुआ, गुरूवार को बच्चे हुए, शुक्रवार को बीमार पड़ गए, शनिवार को अस्पताल गए और रविवार को चल बसे। क्या इसे ही सफल जिन्दगी कहेंगे।

मुनिश्री ने कहा कि मृत्यु को जीतने की एक कला है, जिसके लिए जीवन भर साधना करनी पड़ती है, जीने की कला सीखनी पड़ती है, विचारों को साफ करना पड़ता है, आत्मा पर आए हुए विकारों को, मोह के जालों को हटाना पड़ता है, तभी मनुष्य जीने की कला में प्रवीण होता है। जो जीने की कला सीख लेता है, वह व्यक्ति इस दुनिया में अपने कर्तव्य के लिए जीता है और कर्तव्य के लिए ही मर मिटता है। जिसे मृत्यु का भय नहीं रहता, वही मृत्यु को जीत सकता है और मृत्यु को जीतने का उपाय है- अपने आपको जीतना, अपनी आत्मा को जीतना, अपने राग-द्वेष को नष्ट करना, मन और पाँचों इंद्रियों पर नियंत्रण रखना, उन्हें साधना व शांत करना तथा ममत्व तोड़ना और समता धारण करना। सबसे क्षमायाचना और मैत्रीभावना के साथ विदा होइये। विकारों और वासनाओं की धूल यही झाड़कर अपनी आत्मा को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनाइये। प्रवचन के पूर्व संपूर्ण जिला से आए श्रद्धालुओं ने श्रीफल भेंट कर मुनिश्री से आशीर्वाद लिया। प्रवचन सभा का संचालन अशोक लिरिल, सहयोग अशोक शाकाहार ने किया।

दूसरों को दिखाने के लिए धर्म, ध्यान न करें: मुनिश्री प्रभातसागर

खुरई। प्राचीन जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री प्रभातसागर महाराज ने 'रयणसार' ग्रंथ पर प्रकाश डालते हुए विशाल स्वाध्याय सभा को संबोधित करते हुए कहा कि व्यक्ति को हमेशा धर्म, ध्यान दूसरों को दिखाने के लिए नहीं वरन अपने आत्म कल्याण के लिए ही करना चाहिए। धर्म निपटाने की वस्तु नहीं यह तो अंतरंग में धारण करने के लिए किया जाता है।

मुनिश्री ने कहा कि आज मेचिंग का जमाना है। अनेक महिलों मंदिर आते समय जितना समय अपने श्रृंगार आदि में लगाती हैं उससे कहीं अधिक कम समय मंदिर में दर्शन, वंदन, पूजन आदि करने में सदुपयोग कर पाती हैं यह धारणा ठीक नहीं। धर्म, ध्यान, मंदिर, पूजन, आहारदान आदि देने वाले महिला, पुरुष, युवा को कम से कम व्यसन मुक्त होना चाहिए। जो व्यक्ति सप्त व्यसन करता है वह भला कैसे अपने मन को निर्मल एवं पवित्र बना सकता है।

मुनिश्री ने कहा कि जैन धर्म का परिपालन मात्र हम ही नहीं करते जो भी व्यक्ति हमारे मुनि, आर्यिका की त्याग, तपश्चर्या को देखता या श्रवण करता है उसका हृदय श्रद्धा से भर जाता है। विनोबा भावे जैन धर्म से प्रभावित होकर संलेखना व्रत को अंगीकार कर क्रमशः अन्न, पेय पदार्थ एवं जल को त्याग कर समाधिस्थ हुए थे ऐसे अनेक उदाहरण मिल जोंगे। भक्ति तो ऐसी होना चाहिए कि जो भक्त और भगवान की समस्त दूरियों को समाप्त कर दे। जल्दबाजी एवं आकुलता करने से धर्म, ध्यान करना संभव नहीं। जो समर्पित एवं निष्काम भाव से धर्म ध्यान करता है उसका कल्याण निश्चित ही हो जाता है।

प्रवचन श्रवण करते श्रद्धालु

प्रवचन देते मुनिश्री प्रभातसागर महाराज

मुनिश्री ने कहा कि सम्यकदर्शन, सम्यकज्ञान एवं सम्यक चारित्र से युक्त मुनिराज ही मोक्षगामी हुआ करते हैं। बिना रत्नत्रय को धारण किए व्यक्ति का कल्याण संभव नहीं। सच्चे देव, शास्त्र, गुरू पर जो श्रद्धान करता है, उनके बनाए मार्ग पर चलता है वह अपनी मंजिल अवश्य ही प्राप्त कर लेता है। गुरू पत्थर की नाव के समान नहीं होना चाहिए, जो स्वयं तो डूबते ही हैं साथ ही अपने शिष्यों को भी डुबो देते हैं। प्रवचन सभा के पूर्व आचार्यश्री विद्यासागर महाराज की पूजन संपन्न हुई। प्रवचन सभा का सहयोग संकलन अशोक शाकाहार ने किया।

जीवन का सत्य वासना नहीं धर्म साधना हैः मुनिश्री पवित्रसागर

बीना- श्रुतधाम में आयोजित विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री पवित्रसागर जी महाराज ने कहा कि जीवन का सत्य वासना नहीं, धर्म साधना है; भोग नहीं त्याग है। वासना अच्छे भले मनुष्य को शैतान बना देती है और साधना पतित से पतित इन्सान को भी भगवान बना देती है। वासना का अर्थ है- आत्मा से हटकर बाहर की ओर दौड़ना और संसार के भोगों से जुड़ना तथा साधना का अर्थ है- सत्य के निकट पहुंचना, आत्मा को पहचानना। मनुष्य यदि अपनी कामनाओं, इंद्रियों और मन पर काबू पा ले, तो उसे नश्वर संसार में भी आनंद का सागर दिखाई देने लगे। मुक्ति का एकमात्र द्वार वीतराग (राग-द्वेष रहित) धर्म है। मनोविकारों के चंगुल से छूटकर ही व्यक्ति वीतराग को उपलब्ध हो सकता है। शरीर के तल पर जीने वाले लोग आत्मा की अनुभूति नहीं कर सकते।

मुनिश्री ने कहा कि पुण्य और पाप एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सम्पत्ति और विपत्ति, पुण्य और पाप का विपाक है। अत: मनुष्य को पुण्योदय से प्राप्त वैभव-एश्वर्य के बलबूते पर इतराना नहीं चाहिए और पाप के उदय से कठिन परिस्थितियों में घबराना नहीं चाहिए। वस्तु विकारी नहीं, अपितु उसके प्रति ममत्व और आसक्तिपूर्ण विचार ही विकार को जन्म देते है। संसार में रहना बुरा नहीं, अपितु मन में संसार को बसाना बुरा है। पानी में तैरने वाला सागर से पार हो जाता है, परन्तु उसमें डूबने वाला वहीं मर जाता है। हमें संसार में तैरना है, डूबना नही। जीवन प्रथम और मृत्यु अंतिम सत्य है। मृत्यु का भय जीवन के लिए मोह को जन्म देता है और जीवन को मोह आराम सुविधा की भावना को जन्म देता है और फिर मनुष्य इस तरह जीने लगता है कि बस वहीं एक मनुष्य है, समाज से उसका कोई संबंध नही। हम दो हमारे दो में समा जाता है। लेकिन वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य वह इकाई है, जिससे समाज का निर्माण होता है। हम शरीर के लिए जीते हैं और शरीर के लिए मरते हैं। यही तो बिडम्बना है।

मुनिश्री प्रयोगसागर जी महाराज ने कहा कि सांसारिक एश्वर्य

प्रवचन श्रवण करते श्रद्धालु

में जीने वाला व इंद्रिय सुखों को लोलुप व्यक्ति सत्य (आत्मा) के दर्शन कभी नहीं कर सकता। सत्य उदात्त, मधुर व विराट होता है। इस संसार में सत्य से बढ़कर दूसरा कोई मुक्तिदाता नहीं है। सत्य ही जीवन है, जीवन ही सत्य है। सत्य ही शिव है, शिव ही सुन्दर है। हम अच्छा जीवन जीने का अभिनय तो करते हैं मगर अच्छा-सच्चा जीवन जी नहीं पाते।

मुनिश्री ने कहा कि संयम वह मशाल है, जो जीवन के कोने-कोने को आलोकमय कर देती है। संयम वह पतवार है, जो जिन्दगी की नाव को भवसागर के पार पहुंचा देती है। संयम वह तपस्या है, जिससे गुजरकर व्यक्ति काँच से कंचन बन जाता है। संयम वह कवच है, जो विषयों (इंद्रिय सुखों) के बाणों को भीतर घुसने से रोकता है। संयम भारतीय सँस्कृति की आत्मा है। संयम जीवन-क्राँति की दास्तान है। संयम साधना की ठोस भूमि है। संयम जीवन की महान सम्पदा है। संयम मोक्ष का प्रवेश द्वार है।

आचार्य सुनील सागर जी प्रवचन

यहां से हारा तो कहां जाऊंगा सरकार.....

चातुर्मास का चौथा रविवार

मेहंदी रंग लाती है घिसने के बाद, उसके रंग में निखार आता है । दूसरों के हाथों को सुंदर बनाती है। तभी तो मनभावन को अच्छी लगती है। इसी प्रकार मेरे गुरुवर की सौम्य मुर्त को जो देख लेता है वह अपने आप खींचा चला आता है । आप इतने निर्मल व इतने सरल अंत: करण वाले व्यक्तित्व के धनी हैं सरलता की मूर्ति कैसी हो वह पूज्य गुरुवर को देखकर ही बताया जा सकता है आपके दर्शन मात्र से ही मन की सारी बुराइयां भाग जाती है। यही कारण है जिन पर बड़े उपदेशों का प्रभाव नहीं पड़ा ,वे गुरुवर के दर्शन मात्र से सत्पथ पर लग जाते हैं मैं ऐसे कई नौजवानों को जानता हूं इसमें परम गुरु भक्त श्रेणीक संतरामपुर गुजरात के निवासी इसी श्रेणी में प्रमुख्यता रखते हैं ।

चाँदवड़ की प्राचीन जैन धरोहर (गुफा और मंदिर)

- मनीष जैन, उदयपुर,

महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या तीन, आगरा - मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग पर चाँदवड़ नाम का एक सुन्दर नगर स्थित है। ये नगर सह्याद्रि की पहाड़ियों के मध्य स्थित है और अपने किले, गुफा तथा विभिन्न संप्रदाय के मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। इसी नगर के पूर्व दिशा की पहाड़ी पर एक प्राचीन जैन गुफा है, साथ ही नगर में एक पुरातन जैन मंदिर भी स्थित है - जिनमें अनेक प्राचीन जैन प्रतिमों स्थित है।

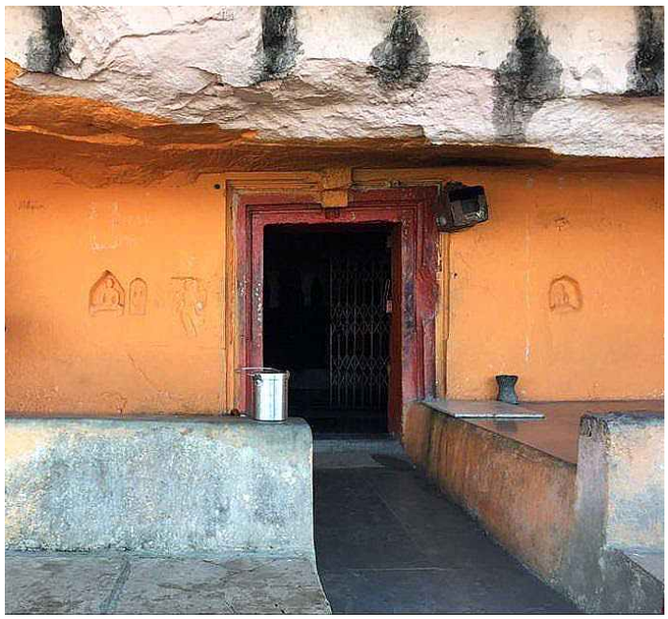

चाँदवड़ की गुफा तथा अन्य जैन धरोहर का महत्व

चाँदवड़ की जैन गुफा नगर के पूर्व दिशा की पहाड़ी में स्थित है।

ये गुफा अतिसुन्दर है और रमणीय वातावरण में स्थित है। गुफा में मूलनायक १००८ श्री चन्द्रप्रभ भगवान जी, भगवान आदिनाथ जी, भगवान पार्श्वनाथ जी समेत काफी सारी जिन प्रतिमाएं हैं।गुफा में स्थित प्रतिमाओं की ऊँचाई २ से ४ फ़ीट तक है। मूलनायक भगवान चन्द्रप्रभ प्रतिमा की ऊँचाई सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त गुफा में यक्ष यक्षी की सुन्दर प्रतिमायें भी स्थित हैं।

इसके अलावा नगर के ही एक अन्य मंदिर में एक भगवान

आदिनाथ जी मूलनायक के रूप में हैं, इस मंदिर के शिलालेख से ज्ञात होता है कि यह प्रतिमा जी विक्रम संवत १२९२ ई. में फाल्गुन शुक्ल १२ को स्थापित की गयी थी।

चाँदवड़ नगर का इतिहास

प्रारम्भ से ही चाँदवड़ व्यापार का एक प्रमुख केंद्र रहा है, वजह है इसका एक प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर अवस्थित होना। वो व्यापारिक मार्ग जो पुनेकवडी (वर्तमान पुणे) तथा नासिकानगरी (नासिक) से खानदेश (तापी और सहायक नदियों का क्षेत्र) को जोड़ता है। और इसी व्यापारिक मार्ग के एक पड़ाव के रूप में और यहाँ के पर्वतीय दर्रे वाले मार्ग की सुरक्षा हेतु ही चाँदवड़ नगर और एक किले की स्थापना की गयी। यहाँ से गुजरने वाले मार्ग को चन्दोर मार्ग कहा जाता था। चाँदवड़ किले की स्थिति इस प्रकार की है कि यहाँ से कम से कम १५ से २० किलोमीटर के मार्ग पर नजर रखी जा सकती थी।

चाँदवड़ के किले का निर्माण ८०१ ईस्वी में राजा दृधप्रहार ने करवाया था, जो कि यादव वंश (सेनुवा वंश) का संस्थापक माना जाता है। इस राजा के पूर्वजों का सम्बन्ध मथुरा और द्वारका से था, शायद यदुवंश

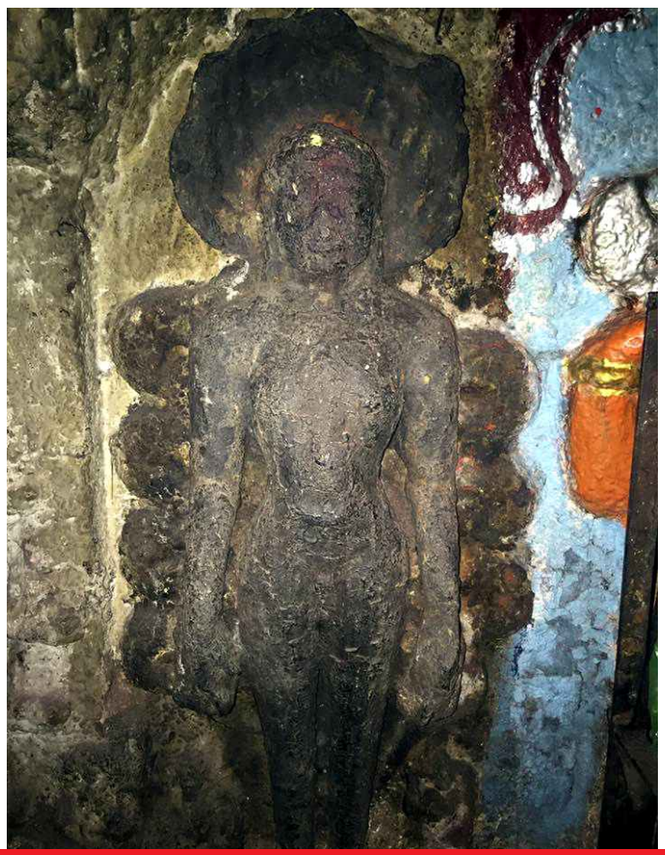

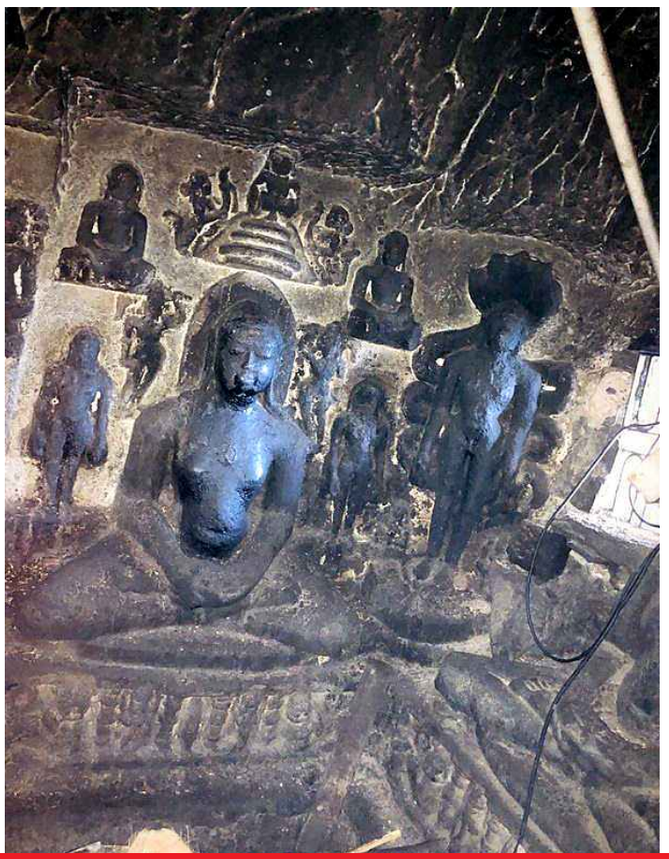

के सम्बन्धी रहे हो। तभी राजा दृधप्रहार ने अपने वंश का नाम यादव वंश रखा। प्रसिद्द इतिहासकार ए एस अल्टेकर के अनुसार राजा दृधप्रहार ८६० ईस्वी के समय तक चाँदवड़ पर राज्य करता था और इसके राजा बनने की कहानी के सन्दर्भ में वे लिखते है कि दृधप्रहार एक क्षत्रिय कुल से तथा जब खानदेश और आस पास की जनता प्रतिहार-गुर्जर राजाओं तथा राष्ट्रकूट राजाओं के आपसी और वर्चस्व वाले युद्धों से परेशान हो चुकी थी, तब क्षेत्र में एक अराजकता का माहौल उस समय हो गया था। उसी समय दृधप्रहार ने कुछ स्थानीय युवकों के गुटों से मिलकर यहाँ की जनता की रक्षा इन सेनाओं और उनकी लूटमार से की थी, फलस्वरूप वे सुरक्षा हेतु उसे कर देने लगे और इस प्रकार वो क्षेत्र का राजा बन गया और उसकी शक्ति में निरंतर वृद्धि हुई, उसका परिवार समृद्धि को प्राप्त हुआ।

चाँदवड़ की जैन गुफा का निर्माण एवं इतिहास

राजा दृधप्रहार जैन धर्म का अनुयायी था और तीर्थंकर चन्द्रप्रभ भगवान का भक्त था और इसीलिए उसने इस स्थान का नाम चंदौर रखा

जो धीरे धीरे चँदोड़, चांदोड और चाँदवड़ हो गया। चाँदवड़ का एक और नाम चन्द्रादित्यपुर भी प्रसिद्ध रहा था किन्तु मुख्य नाम चंदौर ही था। राजा के जैन अनुयायी होने का और तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु जी के भक्त होने का वर्णन कुछ पुरातन की जैन पुस्तकों में भी मिलता है। इसके अतिरिक्त इसका उल्लेख वसई (बेसिन) और आसवी शिलालेखों में भी मिलता है।

चाँदवड़ के किले के अलावा राजा दृधप्रहार और उसके पुत्र सेउनाचंद्र ने चाँदवड़ किले के पश्चिमी-दक्षिणी भाग वाली पहाड़ी पर नवमी शताब्दी के पूर्वार्ध में एक बड़ी जैन गुफा का निर्माण कराया। ये गुफा बनाने का मुख्य उद्देश्य आस पास से विहार करते जैन मुनियों को एक शांत, अनुकूल, धार्मिक वातावरण और निवास प्रदान करना था। यहाँ उन्होंने तीर्थंकर चन्द्रप्रभ की मूलनायक प्रतिमा गुफा में ही बनवाकर पंचकल्याणक कराया। कालांतर में अगले १०० या २०० वर्षों में अन्य तीर्थंकर तथा यक्ष-यक्षी प्रतिमायें भी उनके वंश के ही अन्य राजाओं द्वारा उकेरी गयी। इस क्षेत्र में जैन मुनि अधिकांशत: गजपन्था, मांगी-तुंगी सिद्ध क्षेत्रों और देवगिरि, एलोरा के मंदिरों /गुफाओं की वंदना करते हुए या खानदेश को जाते हुए चाँदवड़ से गुजरते थे, और कुछ दिनों के लिए यहाँ की गुफा में ध्यान करते थे, निवास करते थे।

बाद में सेउनाचंद्र ने राष्ट्रकूट राजाओं के साथ में मधुर साधर्मिक सम्बन्ध स्थापित किये और उनके सहयोगी किन्तु स्वतंत्र राजा बनकर रहे। बाद के यादव राजाओं ने अपनी राजधानी चाँदवड़ से हटाकर देवगिरि कर दी किन्तु तब भी चाँदवड़ के किले और गुफा का महत्व कम नहीं हुआ।

गुफा की वर्तमान स्थिति तथा पहुंच मार्ग

ये गुफा चाँदवड़ नगर के पूर्व दिशा की पहाड़ी में स्थित है, जिसका रास्ता चाँदवड़ के तालुका/तहसील कार्यालय के पास से होकर जाता है। गुफा तक पहुंचने के लिए सीढिया है और इनकी संख्या अधिक नहीं है, लगभग २० या २५ मिनट की चढाई में गुफा तक पंहुचा जा सकता है। गुफा काफी समय से उदासीनता के कारण बुरी स्थिति में थी, कुछ अनधिकृत कब्ज़ा भी था, अभी गाँव वालों के प्रयास के कारण गुफा में जाली लगाकर प्रतिमा जी सुरक्षित कर दी गई हैं, लेकिन अभी भी गुफा

के एक कोने की मूर्तियां लगभग छिप सी गई हैं। गुफा में और गुफा के बाहरी भाग में स्थित यक्ष यक्षी प्रतिमाओं को स्थानीय लोगों ने रंगों से पोत दिया था - जो अभी भी मौजूद है। गुफा से थोड़ा पहले ही टीनशेड भी बनाया हुआ है, और कालिका माता मंदिर का एक पुराना कमानीनुमा बोर्ड भी लगा हुआ है। जैन गुफा मंदिर का एक बड़ा बोर्ड हमें भी साथ में ही लगाने की आवश्यकता है, ताकि दर्शनार्थी भटक नहीं जाए या भ्रमित नहीं हो जाए।

हमारा कर्तव्य

यह क्षेत्र मांगीतुंगी, एलोरा, णमोकार तीर्थ और गजपन्था के नजदीक ही है। चढ़ाई भी अधिक नहीं है, कृपया करके सभी लोग इन गुफाओं के दर्शन करने जरूर जों, अन्यथा ये गुफाएं शीघ्र ही विलुप्त हो जायेंगी अथवा पुन: अवैध कब्ज़ा हो जाएगा। अब इस महत्त्वपूर्ण धरोहर को बचाने की जिम्मेदारी हम सबकी है। आइये हम इस स्थल के दर्शन करके पुण्य लाभ ले और इस धरोहर को बचायें।

आचार्य श्री विपुल सागर जी महाराज ससंघ का चातुर्मास -पटना (बिहार)

तपस्वी आचार्य श्री १०८ विपुल सागर जी महाराज का ४५वें वर्षायोग एवं आचार्य श्री १०८ भद्रबाहु सागर जी महाराज व मुनि श्री १०८ भरतेश सागर जी महाराज ससंघ का मंगल चातुर्मास कलश स्थापना समारोह रविवार को कदमकुआं स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर मंदिर में उत्साह पूर्वक आयोजित हुआ।

मंगल चातुर्मास कलश स्थापना सहित अन्य मांगलिक क्रियाओं हेतु पुण्यशाली पात्र बोली के माध्यम से चयनित किया गया। जैन संतों के वर्षायोग को लेकर पटना जैन समाज के बीच उत्साह का महौल है। दमोह से पधारे शास्त्री डॉ. अभिषेक भैया ने मधुर भजनों की प्रस्तुति दी।

आचार्य श्री भद्रबाहु सागर जी महाराज ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आपने चातुर्मास का मंगल कलश तो स्थापित कर दिया, अब आपको भी तप और संयम की ओर बढ़ना चाहिये, तभी यह चातुर्मास सफल होगा।

आचार्य श्री ने कहा कि अहिंसा धर्म के पालन के लिये जैन साधु वर्षायोग करते है, वर्षायोग करने का उद्देश्य श्रद्धालुओं में आध्यात्मिक जागरण व श्रद्धा को समीचीन करना है। मानव ८ माह धनार्जन करके संसार ही बढ़ाता है। वर्षायोग के ४ माह पुण्यार्जन कर मानव जीवन के महत्व को समझना है।

वयोवृद्ध तपस्वी आचार्य श्री १०८ विपुल सागर जी महाराज चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री १०८ शांतिसागर जी महाराज के परंपरा के तृतीय पट्टाचार्य श्री १०८ धर्म सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य हैं।

- प्रवीण जैन (पटना)

मडावरा में चातुर्मास कलश स्थापित

मडावरा(ललितपुर) वर्णीनगर मडावरा में चर्या शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विशुद्ध सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री १०८ सुप्रभ सागर जी एवं मुनि श्री १०८ प्रणत सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य में चातुर्मास कलश स्थापना का कार्यक्रम नगर की ह्रदय स्थली श्री महावीर विद्या विहार के प्रांगण में संपन्न हुआ। प्रात:कालीन वेला में श्रीजी की शोभायात्रा निकाली गई जो नेमिनाथ जिनालय से प्रारंभ होकर श्री महावीर विद्या विहार के परिसर में पहुंची जहां पर श्रीजी का अभिषेक व शांति धारा पुण्यार्जक परिवारों द्वारा की गई।

चातुर्मास कलश स्थापना समारोह के अवसर पर मुनिश्री ने मंत्रोच्चारण के साथ मंगल कलशों को स्थापित किया।धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री सुप्रभ सागर महाराज ने कहा कि चातुर्मास कलश विश्व शांति और विश्व कल्याण की भावना के उद्देश्य और चातुर्मास निर्विघ्न सम्पन्न होने की भावना से स्थापित किए जाते हैं। जैन साधु चातुर्मास इसलिए करते हैं कि वारिश के कारण जमीन पर सूक्ष्म जीव उत्पन्न हो

जाते हैं उन जीवों की हिंसा न हो इसी उद्देश्य के साथ जैन साधु-संत एक स्थान पर चार माह रुककर धर्म-ध्यान करते हैं। श्रावकों को भी धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

-शिक्षक पुष्पेंद्र कुमार जैन, मडावरा(ललितपुर)

'गिरनार वंदना' पुस्तक का विमोचन

'गिरनार वंदना' पुस्तक का विमोचन हुआ। इसके लेखक 'मुनि सुधीर सागर' है। जिन्होंने गुरुवर के आशीर्वाद व प्रेरणा से यह कार्य पूर्ण किया तथा इस पुस्तक को गुरुवर आचार्य सुनील सागर जी के कर कमलों में समर्पित की, इस पुस्तक में गुरुवर की गांधीनगर से श्री गिरनार पर्वत तक का सजीव वर्णन है।

सराकोद्धारक आचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज की चातुर्मास स्थापना

इस वर्षायोग में आप सभी कुछ न कुछ परिवर्तन करें : आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज

तिजारा। १५ जुलाई सोमवार की प्रातःकाल की शुभ बेला राजस्थान माटी की पुण्यधरा तिजारा नगर के लिये स्वर्ण दिवस के रूप में आयी। डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने बताया कि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ससंघ की चातुर्मास स्थापना में देश के विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु तिजारा पहुंचे हुए थे।

वर्षायोग के मुख्य कलश प्राप्त करने का सौभाग्य श्री सुशील कुमार, राकेश जैन आज़ाद नगर व उनके परिवार को मिला।

तदनंतर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने कहा कि १२ में से ४ निकालने पर कितने बचे? इस प्रश्न पर प्रवचन शुरू करते हुए कहा कि १२ महीने में से ४ महीने निकालने पर ० बचेंगे। यह सुनकर आप सोच रहे होंगे कि यह उत्तर तो गलत है, पर बात सही है। बारह महीने में से वर्षा ऋतु के चार महीने निकाल दें तो फिर फसल आदि कुछ नहीं होने से शून्य बचेगा। आप सभी इन दिनों में अपना मानस बनाएँ कि हम भी अधिक से अधिक त्याग की साधना करके इस वर्षायोग में नई जीवन शैली जीने का प्रयास करें। जीव-रक्षा की दृष्टि से यह वर्षायोग बहुत महत्वपूर्ण है। दिगंबर साधु, जीव रक्षा की दृष्टि से एक स्थान पर रहकर साधना किया करते हैं। इस वर्षायोग में आप सभी कुछ न कुछ परिवर्तन करें। सम्यग्ज्ञान का अर्जन करें। अपने-अपने बच्चों को भी

गुरुओं के पास ले जाएँ। सभी सहनशक्ति का विकास करें। अपने-अपने घरों को आदर्श घर बनाएँ।

अभी तक तो हम लोग स्वतंत्र थे, पर आज से दीपावली तक हम लोग बँध गए हैं। अब विशेष परिस्थिति को छोड़कर कहीं नहीं जाएँगे। चारों दिशाओं में १० किमी की सीमा विशेष परिस्थिति के लिए रखी है। इस प्रकार आचार्य श्री ने चातुर्मास का महत्व बताते हुए अपनी वाणी को विराम दिया।

गुरुकुल संस्कृति पत्रिका का लोकार्पण

अतिशय क्षेत्र श्री तिजारा जी में सरकोद्धारक पूज्य आचार्य श्री १०८ ज्ञान सागर जी महाराज (ससंघ) के वर्षायोग की मंगल कलश स्थापना अति भव्यता से हुई। इस अवसर पर ज्ञानसागर गुरुकुल'(बसावा) की मुख्य पत्रिका 'गुरुकुल संस्कृति के प्रवेशांक' का लोकार्पण अधिष्ठाता ब्र. भैया ने कराया- लोकार्पण क्षेत्रीय विधायक संदीप यादव, विपिन जैन योगेश जैन, डॉ. नीलम जैन, पवन जैन द्वारा संपन्न हुआ। भैया जी द्वारा प्रति आचार्य श्री एवं समस्तसंघ को भेंट की गई। सभी ने गुरुकुल द्वारा की जा रही सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

- विकासजैन

कीर्ति स्तम्भ को तोड़ने से संपूर्ण राष्ट्र की जैन समाज में रोष व्याप्त
मुख्यमंत्री एवं अन्य प्रशासनिक अमला को दिया ज्ञापन

खुरई- आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के ५०वें संयम स्वर्ण महोत्सव पर निर्मित जबलपुर में स्थापित कीर्ति स्तंभ को नगर निगम कर्मचारियों के द्वारा तोड़े जाने पर संपूर्ण राष्ट्र की जैन समाज में रोष व्याप्त है। मुनिश्री अभयसागर जी महाराज, मुनिश्री प्रभातसागर जी महाराज, मुनिश्री निरीहसागर जी महाराज की मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सकल दिगम्बर जैन समाज खुरई एवं समस्त अहिंसक समाज ने अनुविभागीय अधिकारी खुरई के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री, राज्यपाल महोदय, नगर पशासन मंत्री, वित्तमंत्री, कमिश्नर एवं जबलपुर जिलाधीश महोदय के नाम से ज्ञापन प्रेषित किया। ज्ञापन में बताया गया कि पंचायत सभा जबलपुर जैन समाज के निवेदन पर २५ दिसम्बर १७ को नगर निगम जबलपुर के सदन में संकल्प क्रमांक २४४ के तहत ६ अप्रैल १८ को सिविक सेन्टर एवं शांतिनगर तालाब के किनारे एक छोटे से भूखण्ड ८ वाई १० पर कीर्ति स्तंभ बनाने की स्वीकृति प्रदान की थी। इसके उपरांत भी कीर्ति स्तंभ को तोड़ना जैन समाज ही नहीं वरन् संपूर्ण राष्ट्र की अहिंसक समाज की कीर्ति को खंण्डित करने जैसा है।

ज्ञापन में कहा गया है कि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज मात्र जैन समाज के ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व के आदर्श एवं प्रेरणा स्रोत है। यदि कार्यवाही नही की गई तो जैन समाज संपूर्ण राष्ट्र में पूर्ण

ज्ञापन देने जाते जैन धर्मावलम्बी

अहिंसक तरीके से जन आंदोलन, धरना, प्रदर्शन, भूख हड़ताल आदि करने को बाध्य हो जायेगी। ज्ञापन का वाचन विजय गुरहा, मुकश कबाड़ी, मनीष मोदी, प्रशांत गुरहा, सुरेन्द्र जैन, मनीष पहलवान, प्रसन्न जैन, अशोक शाकाहार आदि ने संयुक्त रूप से किया। सैकड़ों जैन समाज के अनुयायिओं ने ज्ञापन में हस्ताक्षर कर विरोध दर्ज कराया।

चातुर्मास हेतु हुई मंगल कलशों की स्थापना

बीना- मुनिश्री पवित्रसागर जी महाराज, मुनिश्री प्रयोगसागर जी महाराज के सानिध्य एवं ब्रम्हचारी राकेश भैया सिद्दयातन, ब्र. विजय भैया लखनादौन, ब्र. रजनी भैया रहली, ब्र. मनोज भैया जबलपुर, ब्र. अनूप भैया विदिषा, ब्र. विजय भैया सागर, ब्र. प्रवीण भैया खुरई के मार्गदर्शन में मुनि संघ की चातुर्मास हेतु मंगलकलशों की स्थापना की गई।

प्रथम कलश प्राप्त करने का सौभाग्य अंगूरी-राजीव विदिशा को प्राप्त हुआ। द्वितीय कलश की स्थापना बाबूलाल प्रवीण कुमार उजनेट वालों ने की। तृतीय कलश की स्थापना करने का परम सौभाग्य सुनील महेन्द्र पड़रिया वालों को मिला। चतुर्थ कलश हजारी लाल कैलाशचंद मनोज जैन वर्धमान ने प्राप्त किया। पंचम कलश शिखरचंद संजय बीना वालों ने स्थापित किया। छटवाँ कलश संदीप पड़रिया वालों को मिला। सप्तम एवं आखिरी कलश की अभय राजेन्द्र नरेश बीना वालों ने स्थापना की। इसी क्रम में मुनि संघ का पाद प्रक्षालन करने का परम सौभाग्य अंगूरीबाई राजीव जैन विदिशा, राजेन्द जितेन्द्र शैलेन्द्र बीना वालों ने किया। शास्त्र भेंट करने का परम सौभाग्य आशा जैन के दानपति परिवार जबलपुर वालों को प्राप्त

मुनि संघ से आशीर्वाद लेते श्रद्धालु

हुआ। के.एल. जैन विदिशा एवं मुकेश सैतपुर ने भी मुनि संघ को शास्त्र भेंट किये। कार्यक्रम का संचालन ब्रम्हचारी विजय भैया लखनादौन एवं संकलन अशोक शाकाहार ने किया।

मुनि संघ के चातुर्मास हेतु हुई मंगल कलशों की स्थापना

चातुर्मास कलश स्थापना पर मंचासीन मुनि संघ

मंगल कलश

खुरई। प्राचीन जैन मंदिर में न्याय, शिक्षा, वास्तुविद ज्येष्ठ मुनिश्री अभयसागर महाराज, प्रभातसागर महाराज एवं निरीहसागर महाराज के चातुर्मास हेतु मंगल कलशों की स्थापना समारोहपूर्वक संपूर्ण राष्ट्र से आए सैकड़ों श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुई।

चातुर्मास आत्मकल्याण एवं प्राणी मात्र की रक्षा हेतु किया जाता हैः मुनिश्री अभयसागर

खुरई। प्राचीन जैन मंदिर में आयोजित मंगल कलश स्थापना पर ज्येष्ठ मुनिश्री अभयसागर महाराज ने विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि वर्षाऋतु में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति हो जाती है एवं चारों ओर हरियाली होने से जमीन पर चलना भी दूभर हो जाता है इसलिए मुनि, आर्यिका एक स्थान पर रुककर अपने आत्मकल्याण एवं प्राणी मात्र की रक्षा के लिए चातुर्मास करते हैं। गृहस्थ भी वर्षाकालीन सत्र में अपने व्यवसाय से फुरसत हो जाता है इससे उसकी धर्मसाधना में चातुर्मास के निमित्त से काफी वृद्धि होती है।

मुनिश्री ने कहा कि अहिंसा जैन धर्म का प्राण है। अहिंसा का जितना सूक्ष्म विवेचन जैन धर्म में मिलता है उतना अन्य किसी परंपरा में देखने को नहीं मिलता। प्रत्येक आत्मा चाहे वह किसी भी योनि में क्यों न हो, तात्विक दृष्टि से समान है। चेतना के धरातल पर समस्त प्राणी समूह एक है उसमें कोई भेद नहीं है। जैन दृष्टि का यह साम्यवाद भारत के लिए गौरव की चीज है। इसी साम्यवाद के आधार पर जैन परंपरा यह घोषणा करती है कि सभी जीव जीना चाहते हैं, कोई भी प्राणी मरना नहीं चाहता। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम मन से भी किसी के वध की बात न सोचें।

मुनिश्री प्रभातसागर महाराज ने कहा कि शरीर से हत्या कर देना तो पाप है ही किंतु मन में तद्विषयक भाव होना भी पाप है। मन, वचन, काय से किसी भी प्राणी को संताप नहीं देना, उनका वध नहीं करना, उसे कष्ट नहीं देना यही सच्ची अहिंसा है। वनस्पति जगत से लेकर मानव तक की अहिंसा की यह कहानी जैनाचार की विशिष्ट देन है। वोचारों में एकात्मवाद का आदर्श तो अन्यत्र भी मिल जाता है किंतु आचार पर जितना बल जैन धर्म में दिया गया है उतना अन्यत्र नहीं मिल सकता। आचार विषयक अहिंसा का उत्कर्ष जैन परंपरा की अनूठी देन है।

मुनिश्री निरीहसागर महाराज ने कहा कि सामाजिक दृष्टि से इसी अहिंसा को व्रतों के रूप में व्याख्यायित किया गया है। अहिंसा को केन्द्र बिंदु बनाकर उसकी रक्षा के लिए सत्य, अचैर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे आचार सूत्र दिए गए हैं। जैनाचार के पांच व्रतों का ठीक रीति से पालन हो, इस उद्देश्य से व्रतों के दो स्तर स्थापित किए गए हैं। प्रथम अणुव्रत और द्वितीय महाव्रत। हिंसादिक पापों का परिपूर्ण त्याग महाव्रत कहलाता है तथा आंशिक रूप से त्याग होने पर अणुव्रत होता है। साधु महाव्रतों का पालन करते हैं तथा श्रावक (गृहस्थ) अणुव्रतों का। साधना द्वारा श्रावक क्रमशः साधुत्व की ओर कदम बढ़ाते हैं। व्रताचरण के उक्त आधार पर जैन संघटन मुनि, आर्यिका, श्रावक एवं श्राविका रूप चार संघों में विभक्त हैं, इसे ही चतुर्विध संघ कहते हैं।

प्रवचन के पूर्व मुनि संघ के गृहस्थ जीवन के परिजनों का स्वागत, सम्मान चातुर्मास कमेटी के सदस्यों एवं प्राचीन जैन मंदिर के व्यवस्थापक जिनेन्द्र गुरहा, प्रकाशचंद सराफ, अरुण बजाज, हेमचंद बजाज आदि ने किया। धर्मसभा में उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं ने जबलपुर में कीर्ति स्तंभ के तोड़ने की भर्त्सना की एवं जैन समाज पर हुए इस अमानवीय कृत्य के लिए संबंधित अधिकारियों पर त्वरित कार्यवाही करने का आह्वान किया। उन्होंने संकल्प लिया कि जब तक सूक्ष्म संख्यक समुदाय पर अत्याचार होंगे तब तक संपूर्ण जैन समाज पूर्ण अहिंसक तरीके से आंदोलन करती रहेगी। प्रवचन सभा का संचालन ब्रह्मचारी नितिन भैया एवं सहयोग संकलन अशोक शाकाहार ने किया।

यरनाल अब दीक्षा स्थल तीर्थ - आ. वर्धमानसागरजी

- राजेन्द्र जैन (महावीर)

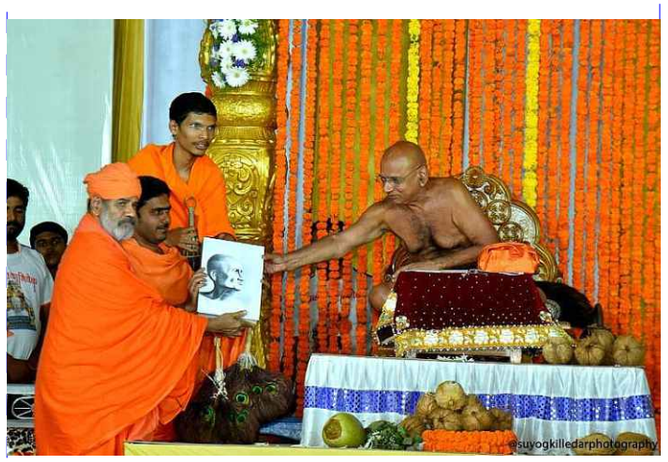

यरनाल। चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज का दीक्षा स्थल अब तीर्थ के रूप में जाना जाएगा। परम्परा के पंचम पट्टाधीश राष्ट्रगौरव आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ने कहा कि यरनाल केवल ग्राम नहीं है यह दीक्षा स्थल तीर्थ बन गया है। देशभर से पहुंचे श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि कर्नाटक उत्तर कन्नड़ क्षेत्र में संघ का यह पहला चातुर्मास है।

यह भूमि अत्यन्त पूजनीय इसलिए है कि दिगम्बर जैन जगत के बीसवीं सदी के इतिहास में यहाँ से प्रथम आचार्य प्राप्त हुए थे। आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज ने यरनाल में दीक्षा लेकर मुनिधर्म का पुनः उद्धार किया है। जो हम सबके लिए प्रेरणा है। पं.सुमेरुचंद दिवाकर ने उनका जीवनवृत्त 'चारित्र चक्रवर्ती' में लिपिबद्ध कर हमारे सामने उनके आदर्ष जीवन को सामने रखा है। आचार्यश्री ने देषभर में विहार कर व दिल्ली के संसद के समक्ष लाल किले के सामने आदि स्थानों पर पहुँचकर दिगम्बर मुनि को सभी स्थानों पर जाने के रास्ते खोले है।

श्रमणों के सरताज थे आ. शांतिसागरजी - मुनिश्री अपूर्वसागरजी

संघस्थ ब्र. पूनम दीदी, दीप्ति दीदी के सुमधुर मंगलाचरण से प्रारंभ धर्मसभा में ओजस्वी प्रवचनकार मुनिश्री अपूर्वसागरजी महाराज ने कहा कि आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज चैतन्य चमत्कारी संत थे, वे आध्यात्मिक जादूगर, श्रमणों के सरताज, अनुत्तर यात्रा के सफल यात्री, ऋद्धि-सिद्धि सम्पन्न, ज्ञान के सूरज, आगमनिष्ठ, चुम्बकीय आकर्षण के धनी, घोरातिघोर उपसर्ग विजयी, जिनवाणी संरक्षक, नरश्रेष्ठ, भविष्य दृष्टा, शांतमूर्ति थे। जिन्होंने स्वयं संयम धारण किया और अनेक जनों को संयम के मार्ग पर लगाया।

100 वर्ष बाद शांतिसागरजी की भूमि पर परम्परा के आचार्य का चातुर्मास - श्री चारूकीर्तिजी भट्टारक

गोमटेश्वर भगवान बाहुबली तीर्थ श्रवणबेलगोला के यशस्वी जगद्गुरू कमर्योगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामी ने अपने मधुर वचनों में सम्बोधित करते हुए कहा कि आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज के पैर में चक्र व हाथ में ध्वजा का चिन्ह था। वैसा ही आचार्यश्री वर्धमानसागरजी के हाथ व पैर में भी है। इसी समानता के चलते सौ वर्ष बाद उनकी परम्परा के आचार्य का चातुर्मास यरनाल में हो रहा है।

पद्म विभूषण धर्माधिकारी डॉ. डी. वीरेन्द्र हेगड़े धर्मस्थल ने कहा कि अपने बच्चों को प्रति शनिवार-रविवार मुनि महाराज के पास लेकर जाए, उनसे धार्मिक संस्कार उन्हें दिलवाये, जिससे उनमें जागृति आएगी। १२ वर्ष बाद होने वाले महामस्तकाभिषेक महोत्सव हेतु उन्होंने आचार्य संघ से अपना सान्निध्य प्रदान करने की प्रार्थना भी की।

इस अवसर पर श्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री अशोक पाटनी (आर.के.मार्बल) किशनगढ़, राजेन्द्र कटारिया, संजय पापड़ीवाल, सुरेश राव सा. पाटिल सबलावत, विनोद डोडनवार, राकेश सेठी, श्रीपाल गंगवाल आदि ने दीप प्रज्जवलन किया।

कलश स्थापना की समस्त मांगलिक क्रियाएं पं.श्री महावीरजी जैन जोबनेर व संघस्थ पं.श्री प्रमोद शास्त्री ने संपन्न कराई ।

कन्नड़ व गुजराती भाषा में अनुवादित 'चारित्र चक्रवर्ती' ग्रंथ का विमोचन अतिथियों ने किया।

जन-जन के प्यारे आचार्य है वर्धमानसागरजी - भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति

हुमचा के भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति स्वामी ने कहा कि आचार्य वर्धमानसागरजी सरलता व वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है, उनके सान्निध्य में तीन महामस्तकाभिषेक एक रिकार्ड है वे सबको साथ लेकर व हॅसमुख व्यवहार से सबको अपना बना लेते है। वे जन-जन के प्यारे आचार्य है। उनका चातुर्मास यशस्वी व जयवंत होगा।

आ. शांतिसागरजी मुनिदीक्षा शताब्दी वर्ष

उल्लेखनीय है कि यह वर्ष प्रथमचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज का मुनिदीक्षा शताब्दी वर्ष है, उन्होंने मुनिदीक्षा यरनाल में ली थी। इसी कारण उन्हीं की परम्परा के पंचम पट्टाधीश आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ ४५ पिच्छीधारी त्यागियों के साथ यरनाल में चातुर्मास कर रहे है।

चातुर्मास में साधु को लौकिक कार्यों में न उलझाएं : मुनि श्री सरल सागर जी महाराज

ललितपुर। ललितपुर जिले के महरौनी विकासखंड में स्थित प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के योग्य शिष्य अध्यात्म योगी एकांत प्रिय मुनि श्री सरल सागर जी महाराज की चातुर्मास स्थापना विधि विधान के साथ अपार श्रद्धा के साथ १८ जुलाई २०१९ को दोपहर में की गई। इस अवसर पर मुनि श्री सरलसागर जी महाराज ने अपने उपदेश में कहा, यह प्राणी निरंतर इन्द्रयों के भोगोपभोग में संलग्न रहता है। आत्मा की ओर आकर्षित कभी नहीं होता।

सिंह वृत्ति पर अंकुश :

मुनि श्री ने कहा चातुर्मास में जीवों की उत्पत्ति अधिक होने से विहार संभव नहीं होता, अतः एक स्थान पर प्रवास करना होता है।इस विधि में साधु का विहार रुक जाने से एक नगर में ही रुकने से उनकी सिंह वृत्ति वाधित हो जाती है।चर्या पराश्रित हो जाती है।अतः साधु को अपने व्रतों के प्रति सदैव तत्पर रहना चाहिए।प्रमाद पूर्ण चर्या पतन का कारण बन जाती है।साधु के परिणाम वीतरागता के रहे, आत्म साधना सतत होती रहे।

साधु साधु रहे :

मुनि श्री कहते हैं श्रावक साधु की संगति में अपने वैराग्य एवं संयम साधना की वृद्धि करे उनकी साधना में सहयोगी बने ।भौतिक संसाधनों से उन्हें दूर रखें, लौकिक कार्यों में न उलझाएं, पारिवारिक कृत्यों की चर्चा न करके धार्मिक चर्चा करें। शंका समाधान करके जिनवाणी का

श्रद्धान बढ़ाएं।

मुनि धर्म तलवार की धार पर चलने का मार्ग है, उन्हें साधना से स्खलित न करें।साधुओं से अपेक्षा न करके भगवान पर श्रद्धान करके जीवन को मंगलमय वनाएँ।मंदिर के निर्माण कार्य से दूर रखें।

- डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

मेधावी प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

ललितपुरवर्णी नगर मड़ावरा में श्री दिगम्बर जैन समाज मडावरा के तत्वावधान में आरती निधि संस्था के सौजन्य से आचार्य श्री १०८ विशुद्ध सागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री सुप्रभसागर के मंगल सानिध्य में श्री महावीर विद्याविहार के परिसर में मेधावी प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि श्रीराम पटैरिया भाजपा जिला उपाध्यक्ष व देवेंद्र जैन प्रबंधक संस्कृत विद्यालय साढूमल रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डां० विरधीचंद्र जैन ने की। कार्यक्रम में मडावरा नगर के विभिन्न विद्यालयों के वर्ष २०१९ के लगभग ४० छात्र-छात्राओं जिन्होंने कक्षा-५,८,१०, व १२ वीं में प्रथम स्थान प्राप्त किया उन्हें सम्मानित किया गया और नवोदय परीक्षा में चयनित मेधावी छात्र व छात्राओं को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

दिगम्बर जैन समाज मडावरा के महामंत्री एवं आरती निधि संस्था के अध्यक्ष डॉ०राकेश जैन सिंघई ने बताया कि १८ जुलाई को मड़ावरा में जन्मी बहिन आरती जैन सिंघई बेहद मेधावी छात्रा थी जिनका आकस्मिक निधन ०८ दिसंबर १९८९ को गंभीर बीमारी के चलते हो गया था।मेधावी छात्रा की स्मृति में प्रत्येक वर्ष क्षेत्र के मेधावी छात्रों को सम्मानित किया जाता है।

०१-कार्यक्रम में मौजूद अतिथि

०२- छात्रा को सम्मानित करते हुए

०३- सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई बालिकाएं

-शिक्षक पुष्पेंद्र जैन, ललितपुर (उ०प्र०)

पर्यावरण संरक्षण को आगे आएं : मुनि श्री सरलसागर

आओ जीवन की सांसे लौटायें, चलो एक पेड़ स्वंय लगायें- ब्र. जय निशांतललितपुर। पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण की वजह से वृक्षारोपण की आवश्यकता इन दिनों अधिक हो गई है। इस उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए तथा शासन द्वारा चलाये जा रहे वृक्षारोपण महाकुंभ में अपनी सहभागिता निभाते हुए महरौनी विकासखंड में स्थित प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में परम पूज्य मुनि श्री सरल सागर जी महाराज के सान्निध्य में अरनाथ विधान एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया।

इस दौरान आम,आंवला,करोंदा,अमरूद,अशोक आदि के वृक्षों को रोपित कर पर्यावरण संवर्द्धन का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर क्षेत्र निर्देशक ब्र. जय कुमार जी निशांत ने कहा कि पृथ्वी का आभूषण वृक्ष हैं।वृक्ष हमें आक्सीजन देकर हमारे वातावरण को स्वच्छ रखते हैं।वर्तमान समय में विगड़ते हुए पर्यावरण को देखते हुए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की आवश्यकता है।प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में एक वृक्ष जरूर लगाना चाहिए।

मुनि श्री सरलसागर जी ने इस पुनीत कार्य को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि पर्यावरण को बचाना है तो हमें वृक्षारोपण करना होगा।बसुधा का अनुपम उपहार वृक्ष ही हैं।अच्छे जीवनयापन करना चाहते हैं तो अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाने चाहिए। जैनदर्शन में पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति, अग्नि में जीवत्व माना गया है। सदैव इनके संरक्षण और सम्वर्द्धन की बात आचार्यों ने कही है।

नवागढ़ में पौधे रोपते अतिथि व अन्य

दिगंबर जैन परिषद का जैन स्कालर्स अवार्ड समारोह संपन्न

नई दिल्लीः अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परिषद दिल्ली प्रदेश द्वारा आई टी ओ स्थित प्यारेलाल भवन में १४ जुलाई को आयोजित २० वें जैन स्कालर्स अवार्ड समारोह में इस वर्ष १०वीं व १२वीं में ९० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले दिल्ली व राजधानी क्षेत्र के २१५ जैन छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। सभी बच्चों को प्रमाणपत्र, स्मृतिचिन्ह, घडी व अन्य उपहार देकर सम्मानित किया गया। शीर्ष पर रहे बच्चों तन्वी, आदित्य, अपूर्वा को १५-१५ हजार, आयुषी व नेहा को १०-१० हजार के चेक भी प्रदान किए गए। कई बच्चों ने ५०० में से ४९९ अंक प्राप्त कर समाज का गौरव बढ़ाया। सम्मानित बच्चों में १२७ लड़कियां व ८८ लड़के थे।

एक अन्य मेधावी छात्रा निष्ठा जैन जिसके जन्म से ही दोनो हाथ नही हैं, जो पैरों से लिखती है और सुंदर पेंटिंग भी बनाती है को विशेष रूप से प्रमाणपत्र, प्रशस्तिपत्र व नकद राशि देकर सम्मानित किया गया तो खचाखच भरा सभागार तालियों की गडगडाहट से गूंज उठा। निष्ठा ने कहा कि कभी हार न मानें और परिश्रम करते रहें।

परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीवन लाल जैन ने बताया कि संस्था की स्थापना २६ जनवरी १९२३ को ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी द्वारा समाज में फैली कुरीतियां दूर करने के उद्देश्य से की गई थी।

समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात न्यूरोसर्जन डॉ. डी सी जैन ने बच्चों को अनेक प्रेरक प्रसंग सुनाते हुए दृढ संकल्प के साथ पुरुषार्थ करने, सादा जीवन उच्च विचार के साथ शाकाहारी जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी। श्री राम कालेज के पूर्व प्राचार्य शिक्षाविद डॉ. पी सी जैन ने बच्चों को कुसंगति से बचने, सोशल मीडिया से सावधानी बरतने तथा एक ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करने की प्रेरणा दी।

- रमेश जैन, लक्ष्मीनगर दिल्ली

रेणू प्रशांतजी गंगवाल, ग्वालियर का आकस्मिक निधन

श्रद्धांजलि सभा में श्रीमती रेणू गंगवाल सुपुत्री श्री शिखरचंद पहाडिया के भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए।

यह सूचित करते हुए दु:ख हो रहा है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शिखरचन्द पहाड़िया भी जेष्ठ पुत्री श्रीमती रेणू प्रशांतजी गंगवाल, (ग्वालियर) का सड़क दुर्घटना में दिनांक 25/7/2019 को निधन हो गया था। शोकाकुल परिवार की ओर से एक शोक-सभा का आयोजन 31 जुलाई 2019 को श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर 161, भूलेश्वर, मुम्बई में किया गया जिसमें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की परम संरक्षक श्रीमती सरिता एम. के जैन, चेन्नई, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद्र जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष/ महामंत्री श्री राजेन्द्र के. गोधा, जयपुर, राष्ट्रीय मंत्री श्री खुशाल जैन सी.ए. महाराष्ट्र अंचल के पूर्व अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार कासलीवाल, औरंगाबाद मंत्री श्री देवेन्द्र काला, औरंगाबाद, वर्तमान अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल, औरंगाबाद, श्री विजय पन्नालाल पापड़ीवाल के अतिरिक्त मुम्बई दिगम्बर जैन समाज के श्रेष्ठीगण श्री गजेन्द्र पाटनी, श्री कमलकुमार बड़जात्या, श्री के.सी.जैन, श्री डी.सी. जैन, श्री ज्ञानचन्द जी बड़ाजात्या, श्री पिनाकिन भाई, खार, श्री सुरेश पहाड़िया, श्री अशोक दोशी, श्री डी.यू.जैन, न्यायमूर्ती श्री सुभाष चांदीवाल आदि हजारों की संख्या में लोग सभा में उपस्थित थे। अवसर पर शोकाकुल परिवार से श्री जोरावरमलजी पहाड़िया, आई.सी.जैन, श्री नेमचंद जैन, प्रेमचंद जी पहाड़िया दिनेश पहाड़िया भाई श्री आनंद पहाड़िया, वरुण पहाड़िया आदि पूरा परिवार सामिल था। शोक संवेदना व्यक्त करते हुए श्री सजा जैन ने भारत जैन महासभा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी आदि संस्थाओं की ओर से प्राप्त सवीना पत्र पर कर सुनाया। जयपुर से पधारे हुए श्री राजेन्द्र के. गोधा ने कहा कि सुपुत्री रेणू जैन हमारे बीच नही है। यह विश्वास ही नही हो रहा है। 24 जुलाई में पुष्पगिरि क्षेत्र पर टी.वी.पर लाईव हो रहे कार्यक्रम में गुरुदेव के प्रति रेणू का नृत्य अपने आप में अनूठों था किसे पता था कि चंद घंटों बाद यह सब घटित होगा निश्चय ही पूर्वभव का कोई अशुभक में रहा होगा जो घटित हुआ उन्होंने अपने परिवार की ओर से तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजली अपिर्ति की। दो घंटे चली इस शोक सभा में अनेकों महानुभावों ने अपनी-अपनी ओर से श्रद्धीनावी अर्पित की।

हमारे नये सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री अनिलकुमार भागचंदजी जैन
कोटा

श्री राहुल रमनलाल चुडीवाल
औरंगाबाद

श्री किशोर मोहनराव भाकरे (जैन)
पैठण (औरंगाबाद)

श्री विमल हिरालाल जैन
(दरगुवावाले)टिकमगढ़

श्री कस्तुरचंद दुलीचंद जैन
लाडवारी (टिकमगढ़)

श्री राजेन्द्र कांतीलाल शाह
अहमदाबाद

श्री रोहणकुमार राजेन्द्रकुमार कटारिया
अहमदाबाद

श्री राजेन्द्रकुमार शोभागमल कटारिया
अहमदाबाद

श्री रुपचंद छीतरमल कटारिया
दिल्ली

श्री अमन पुष्पेन्द्रकुमार कटारिया
अहमदाबाद

श्रीमती पलक दिव्य कटारिया
अहमदाबाद

श्री दिव्य पुष्पेन्द्र कटारिया
बेंगलोर

श्री पुष्पेन्द्रकुमार शोभागमल कटारिया
अहमदाबाद

श्री हार्दिक संतोषकुमार कटारिया
अहमदाबाद

श्री संतोषकुमार शोभागमल कटारिया
अहमदाबाद

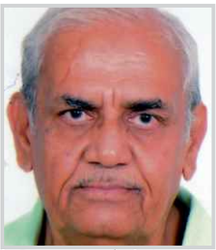
श्री बिमलप्रसाद नेमीचंद पांड्या
अहमदाबाद

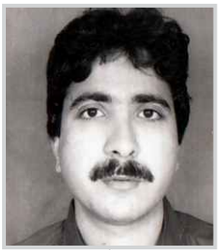
श्री सुधीरकुमार कैलाशचंद पाटनी
अहमदाबाद

श्री प्रदीप बाबूलाल कोटडिया
अहमदाबाद

श्री नवीनकुमार हरीप्रसाद जैन
अहमदाबाद

श्री चक्रेश मोहनलाल जैन)
कोटा

श्री चेतन नंदकिशोर जैन
कोटा

श्री राजकुमार उत्सवचंद जैन
कोटा

श्री आलोक विमलकुमार जैन
कोटा

श्री अशोक ज्ञानचंद जैन
कोटा

श्री सुनीलकुमार अभयकुमार जैन
कोटा

आजीवन सदस्य

श्री सुमित जयकुमार जैन
कोटा

श्री मनिष वृषभ मोहिवाल (जैन)
कोटा

श्री अशोक शांतिलाल जैन
कोटा

श्री आनंद कैन्हयालाल ठौरा
कोटा

श्री श्रेयांसकुमार हुकमचंद जैन
कोटा

श्री सुरेश माणकचंदजी जैन
कोटा

श्री अनुराग हरिशचंद जैन
कोटा

श्री सुनीलकुमार प्रकाशचंद जैन
कोटा

श्री जम्बूकुमार कैन्हयालाल जैन
कोटा

श्री निहालचंद जडावचंद जैन
कोटा

श्री महेन्द्र सोहनलाल जैन
कोटा

श्री नरेश कुमार रमेशचंद जैन
कोटा

श्री संजय माणकचंद जैन
कोटा

श्री जितेन्द्रकुमार के.आर जैन
जबलपुर

श्री विकासकुमार रामलालजी जैन
कोटा

श्री योगेश कपुरचंदजी पाटनी
जालना

श्री पंकज सुंदरलाल जी पाटनी
जालना

श्री दिपेशकुमार झुम्बरलाल पाटनी
जालना

श्री रोहित देवेन्द्रकुमार सोनी
औरंगाबाद

श्री सतिशकुमार अनंतलालजी पहाड़े
शिऊर (औरंगाबाद)

डॉ प्रमोद धन्नालाल चुडीवाल
शिऊर (औरंगाबाद)

श्री कैलाशचंद तिलोकचंद चुडीवाल
शिऊर (औरंगाबाद)

श्री महावीर दीपचंद चुडीवाल (जैन)
शिऊर (औरंगाबाद)

श्री पवन धन्नालाल चुडीवाल (जैन)
शिऊर (औरंगाबाद)

श्री ललित रतनचंद चुडीवाल
शिऊर (औरंगाबाद)

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

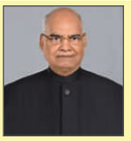

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रुपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संगहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	राजकुमार जैन	सतीश चन्द जैन SCJ	नरेश जैन (कामधेनु), दिल्ली	अनिल जैन	मुकेश जैन	राकेश जैन	राजेन्द्र जैन
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाऊंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA GROUP A Symbol of Quality

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550